Fortnightly per copy Rs. 12/-

18th May 2025

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org

Narendra Bhavan Phone No. : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

न्यायपालिका को करुणा का मार्गदर्शन करने का मामला

- कैलाश सत्यार्थी

नोबेल पुरस्कार से सम्मानित

न्याय का मतलब सिर्फ कठोर, यांत्रिक तरीके से कानून लागू करना नहीं है। इसमें मानवीय स्थिति के साथ गहरा जुड़ाव शामिल है

मुझसे अक्सर ये सवाल पूछे जाते हैं: अपने पूरे जीवन में स्वतंत्रता और न्याय के लिए लड़ने के बाद, अब आप करुणा के लिए आंदोलन क्यों बना रहे हैं? क्या न्याय और करुणा के विचार विरोध ाभासी नहीं हैं? क्या न्यायपालिका का मजबूत हाथ गहरी करुणा से उभर सकता है? ये वैध सवाल हैं।

न्याय का सिद्धांत सभ्य समाज के लिए आधारभूत है। यह अपरिहार्य है। करुणा इस जुड़ाव की आंतरिक अभिव्यक्ति है। यह किसी के दुख से जुड़ाव की सबसे गहरी भावना है जैसे कि वह आपका अपना दुख हो, उस दुख को कम करने की अनिवार्य प्रेरणा के साथ। मेरा मानना छ्है कि करुणा न्याय के उद्धार के लिए अह्वसीजन है।

करुणा और न्याय के बीच के रिश्ते को समझने के लिए, इस रूपक पर विचार करें। जब प्रागैतिहासिक मनुष्य को एहसास हुआ कि उसे बिना खोए या बिना किसी नुकसान के गंतव्य तक पहुंचने की आवश्यकता है, तो उसने जंगल के बीच से एक रास्ता बनाया। गति और सुविधा के लिए, उसने पहिये का आविष्कार किया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, हमने परिवहन के साधनों के क्रमिक विकास को देखा। वर्तमान समय में आते हैं। एक शक्तिशाली और धनी व्यक्ति की कल्पना करें जो कई शताब्दियों के नवाचार का लाभार्थी है और सबसे तकनीकी रूप से उन्नत कार में यात्रा करता है। अचानक, वाहन राजमार्ग पर रुक जाता है और चालक को पता चलता है कि कार का ईंधन खत्म हो गया है। ईंधन की अनुपस्थिति में सबसे महंगा वाहन भी बेकार हो जाता है। इस रूपक में, पथ संविधान

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल मलकपेट द्वारा गुरुकुल परिसर में आयोजित बालकों का संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न, आसन एवं मलकम्भ करते हुए शिविरार्थियों को चित्र में देखा जा सकता है ।

न्यायपालिका को करुणा का मार्गदर्शन करने का मामला

-कैलाश सत्यार्थी नोबेल पुरस्कार से सम्मानित

और कानूनों का प्रतीक है जो एक न्यायपूर्ण समाज का मार्ग प्रशस्त करते हैं। लगातार विकसित और बेहतर होता वाहन न्याय वितरण प्रणाली शासन, पुलिस और न्यायालय प्रणालियों के समान है। ये प्रणालियाँ नागरिकों को एक आदर्श समाज की ओर ले जाती हैं। अंत में, ईंधन का कार्य न्याय वितरण प्रणाली के भीतर करुणा के बराबर है। करुणा सबसे सख्त कानूनों और सबसे मजबूत संस्थानों के लिए भी ऊर्जा का स्रोत होगी। जिस तरह ईंधन के बिना कार का कोई उपयोग नहीं होता, उसी तरह न्याय वितरण प्रणाली करुणा के बिना सच्चा न्याय प्राप्त नहीं कर पाएगी। करुणा को संस्थागत बनाने के लिए हमें एक साधन यानी न्याय वितरण प्रणाली की आवश्यकता है। हाल ही में एक कार्यक्रम में, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने करुणामय न्यायपालिका की महत्वपूर्ण आवश्यकता के बारे में अपने विचार साझा किए। कई न्यायाधीश भारत में न्याय वितरण के लिए उनके दृष्टिकोण को दोहराते हैं, जो हमारे देश में सबसे हाशिए पर पड़े लोगों तक न्याय के असंख्य रास्ते खोलते हैं।

न्यायपालिका में करुणा का अभाव और उसके दुष्परिणाम साफ नजर आते हैं। हमारे संगठन कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि लंबित बाल यौन शोषण मामलों की संख्या २०१७ में लगभग ७१,००० से बढ़कर २०२३ के अंत में लगभग २३६,००० हो गई है। वहीं, कई विचाराधीन कैदी जो ज्यादातर हाशिए के तबके से हैं, जेल में सड़ रहे हैं, अक्सर बिना सुनवाई या यहां तक ध्कि एफआईआर के। ये तो बस उदाहरण हैं। न्यायालय व्यवस्था का खर्च और धमकी, अधिकारियों का भ्रष्टाचार और उदासीनता, और न्याय में अंतहीन देरी, ये सभी व्यक्तिगत और संरचनात्मक स्तर पर दूसरे की पीड़ा से पूरी तरह से अलग होने के लक्षण हैं। जब कोई युवा न्यायिक सेवाओं में प्रवेश करता है, तो वह मानवीय पीड़ा को कम करने की करुणा की प्रेरणा के साथ होता है। वह जो ज्ञान और कौशल प्राप्त करता है, वह उसे इस आंतरिक करुणा को बाहरी न्याय में बदलने के लिए सक्षम बनाता है। समय के साथ, कुछ न्यायाधीश अपने आदर्शवाद और करुणा को दबाते हैं पिछले कई दशकों के अपने काम में, मैं ऐसे अनगिनत जजों और पुलिस अधिकारियों से मिला हूँ जो दयालुतापूर्ण कार्रवाई के हिमायती रहे हैं। १९८२ में, देश में बंधुआ बाल श्रम को समाप्त करने के हमारे संगठन के प्रयासों के बारे में एक समाचार पत्र में खबर छपी थी। उस कहानी को पढ़ने के बाद, उस समय भारत के सर्वोच्च न्यायालय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश न्यायमूर्ति पीएन भगवती ने मुझे उनसे मिलने के लिए कहा। हमने शोषण, पीड़ा और दंड से मुक्ति के अपने अनुभव उनके साथ साझा किए। वह स्पष्ट रूप से व्याकुल थे, और उन्होंने तुरंत मुझसे देश में बंधुआ मजदूरी की स्थिति का विवरण देते हुए एक पत्र लिखने के लिए कहा। यह पत्र बंधुआ मुक्ति मोर्चा बनाम भारत संघ का ऐतिहासिक मामला बन गया, जिसमें न्यायमूर्ति भगवती ने भारत में बंधुआ मजदूरी की परिभाषा को व्यापक बनाया और राष्ट्रीय प्रतिक्रिया रूपरेखा निर्धारित की। यह उन पहले उदाहरणों में से एक था, जहाँ एक चिंतित नागरिक द्वारा लिखे गए एक साधारण हस्तलिखित पत्र को भारत में जनहित याचिका के रूप में स्वीकार किया गया, जिससे एक आम व्यक्ति संवैधानिक अधिकारों के उल्लंघन के किसी भी मामले में देश की सर्वोच्च अदालत का दरवाजा खटखटा सकता था। इस तरह के मामले पहले से ही ज्ञात थे, लेकिन यह न्यायमूर्ति भगवती की करुणा ही थी जिसने उन्हें देश के सबसे बड़े न्यायालय को सबसे गरीब और हाशिए के नागरिकों के लिए सुलभ बनाने के लिए एक अतिरिक्त कदम उठाने के लिए प्रेरित किया। क्या न्याय का इससे बड़ा रूप हो सकता है? हमारा संगठन बचपन बचाओ

न्यायपालिका को करुणा का मार्गदर्शन करने का मामला

-कैलाश सत्यार्थी नोबेल पुरस्कार से सम्मानित

आंदोलन वर्षों से यह स्थापित करने के लिए लड़ रहा था कि जब बच्चे लापता होते हैं, तो वे हवा में गायब नहीं हो जाते। एक अपराध हुआ है। २०१२ में, भारत के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश अल्तमस कबीर ने हमारे मामले में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें कहा गया था कि जब भारत में कोई बच्चा लापता होता है, तो अपहरण या तस्करी के अपराध की धारणा होनी चाहिए।

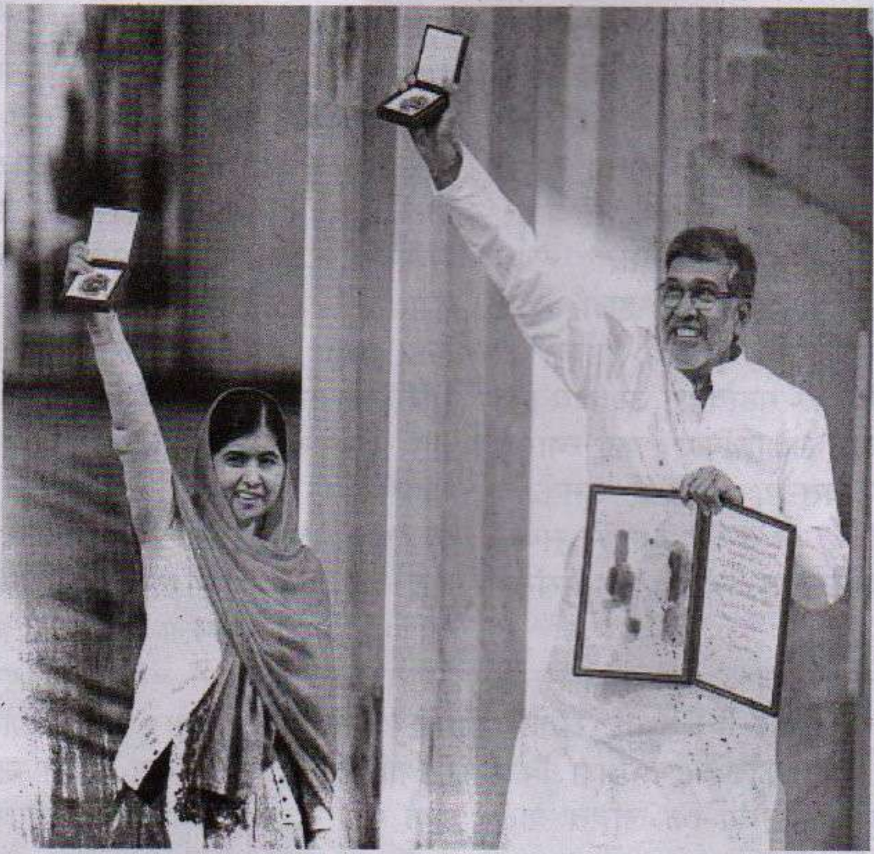

भारतीय न्याय पालिका के दिग्गज ही नहीं, जिन्होंने करुणा के चैंपियन के रूप में काम किया है, बल्कि निचली अदालतों के न्यायाधीश भी हैं, जो शायद ऐसे चुनौतीपूर्ण मामलों का सबसे अधिक सामना करते हैं। वकीलों, सरकारी अधिकारियों, सरकारी अभियोजकों और हर स्तर पर पुलिस अधिकारियों की सामूहिक करुणा से ही करुणामय न्याय दिया जा सकता है। न्यायिक और पुलिस अधिकारियों के प्रशिक्षण में करुणा प्रशिक्षण को एकीकृत किया जाना चाहिए, ताकि वे बिना किसी पक्षपात या भ्रष्टाचार के निष्पक्ष और समय पर न्याय प्रदान करने के लिए अपने पास उपलब्ध उपकरणों का उपयोग कर सकें। उनकी नियुक्तियाँ उनके करुणा भागफल के आधार पर की जा सकती हैं, जिसे हम अब विकसित कर रहे हैं। उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन उनके आदेशों और बातचीत में करुणा प्रदर्शित करने की उनकी क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए। न्याय केवल कठोर, यांत्रिक तरीके से कानूनों को लागू करने के बारे में नहीं है। इसमें मानवीय स्थिति के साथ गहरा जुड़ाव शामिल है, जो कानूनी सहारा लेने वालों द्वारा अनुभव की जाने वाली पीड़ा और कठिनाई को पहचानता है। न्यायपालिका में करुणा का अर्थ कानूनी सिद्धांतों से समझौता या निष्पक्षता और सटीकता का क्षरण नहीं है। यह न्यायाधीशों को कानून का पालन करने और कानून के अक्षर से परे जाकर कानूनी प्रावधानों की व्याख्या इस तरह से करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे मानवाधिकारों का संरक्षण हो।

निःसंदेह, हमें अपने कानूनों और संस्थाओं को लगातार मजबूत करने की आवश्यकता है। लेकिन अंततः, यह आप और मेरे जैसे इंसान ही हैं जो न्याय करते हैं और देते हैं। और हम चाहते हैं कि सत्ता के स्टीयरिंग व्हील पर बैठे लोग इसे करुणा के साथ चलाएं और न्याय के मार्ग पर इसका मार्गदर्शन करें। करुणा आवश्यक तत्परता, कार्रवाई और आपसी जिम्मेदारी लाएगी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कानूनी नतीजे मानवता के हित में हों, और एक अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण दुनिया को बढ़ावा दें।

कैलाश सत्यार्थी नोबेल शांति पुरस्कार विजेता हैं।

हमेशा शाकाहारी रहें

- जयपाल आर्य

कोई जनवर मनुष्य की भान्ति भोजन नहीं करता है, प्रत्येक जानवर का अपना भोजन होता है। यदि तुम भैंसों को ले जोओ बगींचे में और उन्हें वहां छोड दो, तो वे सिर्फ एक खास तरह का घास ही खाएंगी। वे हर चीज कौर कोई भी चीज नहीं खाने लगेंगी, वे बहुत चुन कर खाती हैं। अपने भोजन के प्रति उनकी एक सुनिश्चित संवेदन शीलता होती है। मनुष्य बिल्कुल भटक गया है, अपने भोजन के प्रति वह बिल्कुल संवेदनशील नहीं है। वह हर चीज खाता रहता है। असल में तुम कोई ऐसी चीज नहीं खोज सकते जो मनुष्य द्वारा कहीं न कहीं खाई न जाती हो। कुछ स्थानों में चीन्टियां खाई जाती हैं, कुछ स्थानों में सांप खाए जाते हैं, कुछ स्थानों में कुत्ते खाए जाते हैं। मनुष्य हर चीज खाता है। मनुष्य तो बस विक्षिप्त है। वह नहीं जानता कि किस चीज का उसके शरीर के साथ मेल बैठता है और किस चीज का मेल नहीं बैठता। वह बिलकुल उलझा हुआ है। स्वभावतः मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए, क्योंकि उसका पूरा शरीर शाकाहारी भोजन के लिए बना है। वैज्ञानिक भी इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य शरीर का सारा ढांचा यही बताता है कि मनुष्य को मांसाहारी नहीं होना चाहिए। मनुष्य आया है बन्दरों से। बन्दर शाकाहारी हैं पक्के शाकाहारी हैं। यदि डार्विन की बात सच हैतो मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए।

अब कई तरीके हैं यह निर्णय करने के कि जानवरों की कोई प्रजाति शाकाहारी है या मांसाहारी ? यह निर्भर करता है अन्तडियों पर अन्तड़ियों की लम्बाई पर। मांसाहारी जानवरों की आंत बहुत छोटी होती है। चीता, शेर उनकी आंत बहुत छोटी होती है, क्योंकि मांस पहले से ही पचाया हुआ भोजन है। उसे पचाने के लिए लम्बी आंत नहीं चाहिए। पहचाने का काम तो जानवर ने ही पूरा कर दिया है। अब तुम खा रहे हो जानवर का मांस। वह पचाया हुआ ही है, लम्बी आंत की जरूरत नहीं है। मनुष्य को आंत बहुत लम्बी है। इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है। लम्बी पाचन क्रिया चाहिए और बहुत कुछ व्यर्थ होता है जिसे बाहर फेंकना होता है।

तो यदि आदमी मांसाहारी नहीं है और वह मांस खाता है, तो शरीर बोझिल हो जाएगा। पूरब में, सभी गहरे ध्यानियों ने बुद्ध, महावीर, उन्होंने मांसाहार न करने पर बहुत जोर दिया है। अहिंसा की धारणा के कारण नहीं वह गौण है। लेकिन इस कारण कि यदि तुम सच में ही गहरे ध्यान में उतरना चाहते हो तो तुम्हारे शरीर को निर्भार होने की जरूरत है, स्वाभाविक और प्रवाहापूर्ण होने की जरूरत है। तुम्हारा शरीर हलका होना चाहिए और मासाहारी का शरीर बहुत बोझिल होता है।

कभी ध्यान देना कि क्या होता है जब तुम किसी पशु को मारते हो तो क्या होता है उसे जब वह मरता है ? निश्चित ही, कोई नहीं से तो मर नहीं रहा है। अगर कोई तुम्हारी हत्या करे, तो तुम शान्ति से तो मर नहीं जाओगे। यदि एक सिंह छलांग लगा दे तुम पर और मार डाले तुमको, तो तुम्हारे मन पर क्या गुजरेगी ? वैसी ही तकलीफ सिंह को होती है जब तुम सिंह को मारते हो। यन्त्रणा, भय, मृत्यु, पीडा, चिन्ता, क्रोध, हिंसा, उदासी ये सारी चीजें घटित होती हैं सारा शरीर विषाक्त तत्त्वों से, जहर से भर जाता है। शरीर की सारी ग्रन्थियां जहर छोड देती हैं क्योंकि जानवर बडी पीड़ा में मर रहा होता है। और फिर तुम खाते हो उस मांस को उस मांस में वे सब जहर मौजूद हैं जो जानवर ने छोड़े हैं। फिर वे सारे जहर तुम्हारे शरीर में चले आते हैं।

तुम्हें वही चीजें खानी चाहिए जो स्वाभाविक हैं तुम्हारे लिए स्वाभाविक हैं फल, सेवा, सब्जियां, जितना हो सके खाओ ये सब। और मजे की बात यह है कि तुम इन चीजों को अपनी जरूरत से ज्यादा नहीं खा सकते। जो कुछ भी स्वाभाविक होता है वह सदा तुम्हें तृप्ति देता है, क्योंकि वह तुम्हारे शरीर को पोषण देता है, तुम्हें सुखद अनुभूति देता है। तुम तृप्त अनुभव करते हो। यदि कोई बात अस्वाभाविक है तो वह तुम्हें कभी तृप्ति की अनुभूति नहीं देती। अब तुम शरीर की आवश्यकता के अनुसार नहीं खा रहे हो, तुम बस स्वाद के लिए खा रहे हो। जीभ निर्णायक हो गई है। जीभ निर्णायक नहीं होनी चाहिए। वह पेट के बारे में कुछ भी नहीं जानती है। वह शरीर के बारे में कुछ भी नहीं जानती है। जीभ का केवल एक काम है- भोजन का स्वाद लेना। स्वभावतः जीभ को सजग रहना होता है, केवल यह देखना होता है क कौन-सा भोजन शरीर के लिए ठीक है मेरे शरीर के लिए और कौन-सा भोजन मेरे शरीर के लिए ठीक नहीं है। वह दरवाजे पर बैठा चौकीदार है (मालिक नहीं) और यदि दरवाजे पर बैठा चौकीदार मालिक बन जाए, तो हर चीज गड़बड जाती है।

पं. बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द)

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

अपूर्व वाग्मी, वेदादिशास्त्रों के अपूर्व व्याख्याता, शास्त्रार्थ संग्राम के अपूर्व महारथी पं. बुद्धदेव विद्यालंकार का सान्निध्य तथा स्नेह प्राप्त करने के मुझे अनेक अवसर मिले। उनके ग्रन्थों तथा उनकी विद्वत्ता का परिचय तो मुझे अपनी छात्रावस्था में ही प्राप्त हो गया था किन्तु उनका प्रथम साक्षात्कार एक विचित्र किन्तु अस्वस्तिकर परिस्थिति में हुआ। १९४७ की बात है। देश के स्वतन्त्र होने के साथ ही राजस्थान में जागीरदारी-प्रथा के उन्मूलन का कार्य आरम्भ हो गया था। शताब्दियों से जमीन्दारी सत्ता का आनन्द उठाने वाले जागीरदारों का इससे क्षुब्ध होना स्वाभाविक ही था। अपने पक्ष की पुष्टि में जब उन्हें कहने के लिए कुछ नहीं बचा तो स्वयं को भूस्वामी (भूमि पुत्र नहीं) कह कर अपने विलुप्त हो रहे अधिकारों को बचाने के लिए उनका छटपटाना भी स्वाभाविक था। इसी प्रतिक्रिया के चलते उन्होंने अपने पत्र निकाले तथा कुछ विख्यात वक्ताओं को स्वपक्ष समर्थन के लिए जोधपुर बुलाया और उनके सार्वजनिक व्याख्यान करवाए। इन व्याख्यानों का मुख्य स्वर प्रकारान्तर से जमीन्दारी प्रथा का समर्थन रहता था किन्तु जनता इन व्याख्यानों में निहित प्रच्छन्न प्रतिगामी स्वर सुनने के लिए तैयार नहीं थी।

संयोग ऐसा बना कि जोधपुर के इन कथित भूस्वामियों ने पं. बुद्धदेव विद्यालंकार तथा दिल्ली (शाहदरा) निवासी पं. सुरेन्द्र शर्मा गौड़ को स्वपक्ष समर्थन हेतु आमन्त्रित किया। दोनों आर्य विद्वान् आर्य समाज नगर) में ठहरे किन्तु जब रात्रि को घण्टाघर मैदान में उनके राजनैतिक तेवर लिए हुए व्याख्यान होने लगे तो जनता ने अपनी नाराजगी प्रकट की और शोषक जमीन्दार वर्ग के पक्ष-समर्थन में इनकी कोई बात सुनने से इनकार कर दिया। जनता का तर्क था कि हम आपके धार्मिक उपदेशों को तो सुनने के लिए तैयार हैं किन्तु निहित स्वार्थ वर्ग के पक्ष में दिया गया कोई भी तर्क हमारे गले नहीं उतरेगा। बात तो सत्य थी चाहे वह कितनी ही कड़वी लगने वाली क्यों न हो ? दूसरे दिन आर्य समाज के रविवारीय सत्संग में पं. बुद्धदेव का प्रवचन सुनने पर्याप्त संख्या में वे लोग भी आए जो पूर्वरात्रि उनका राजनैतिक व्याक्यान सुनने से इनकार कर चुके थे।

पं. बुद्धदेव का शास्त्रार्थ महारथी प्रतिवादी-भयंकर रूप मैंने १९५३ में देखा जब वे हीडवाना (जिला नागौर) के शास्त्रार्थ में आर्य समाज के पक्ष का समर्थन करने के लिए पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति तथा पं. हरिदत्त शास्त्री (एकादश तीर्थ) के साथ प्रतिपक्षी माधावाचार्य को शास्त्रार्थ समर में पराजित करने के लिए सिंह-गर्जना करते हुए वैदिक धर्म के मन्तव्यों की पुष्टि में मन्चासीन हुए। उनके द्वारा प्रतिपाद्य विषय थे- पुराणों में अश्लीलता बताना तथा यज्ञों में पौराणिक मत वालों द्वारा पशु-हिंसा के समर्थन का प्रतिवाद। माधावाचार्य ने जब पौराणिकों के अनुसार यज्ञों में आहुति दिए जाने वाले मृत पशु के अंगों, उपांगो को आलंकारिक सिद्ध करना चाहा तथा इन्हें कन्दविशेष कहकर इन अवैदिक यज्ञों को हिंसा विरहित सिद्ध करना चाहा तो पं.बुद्धदेव का सात्विक रोष उमड़ पडा। उन्होंने शिवपुराण में वर्णित दारूवान की कथा का महावीभत्स तथा अश्लील रूप श्रोताओं के सामने रखा, साथ ही शिवदूती के उपाख्यान को प्रस्तुत कर शिव द्वारा अंग विशेष के अश्लील संकेत का बखिया उखाड़ते हुए तथा माधवाचार्य के अलंकारवाद को धराध्वस्त करते हुए व्यंग्यपूर्वक कहा- "कि अयमपि कन्दविशेष"। पुराणवाद पर वाग्मिप्रवर द्वारा किए गए इस निर्मम प्रहार को पौराणिक समुदाय सहन नहीं कर सका किन्तु इससे आर्य समाज की विजय सुनिश्चित हो गई।

पं. बुद्धदेव स्वभाव और प्रकृति से कुसुमदत् कोमल थे तो अवसर आने पर पाषाणतुल्य कठोर भी बन जाते। महाकवि भवबूति की निम्न उक्ति उन पर सर्वथा सार्थक होती थी-

"**बजादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि**।"

मैंने उनका रौद्र रुप १९५५ के आसपास जोधपुर के समीपवर्ती नगर पाली के निकट के वानप्रस्थी रूपाराम जी के आश्रम में देखा। मई-जून का गरम मौसम। वानप्रस्थी जी के धार्मिक सत्संग में आमन्त्रित पं. बुद्धदेव तपती धूप के बीच आश्रम के मध्यवर्ती हाल में भोजनान्तर विश्राम कर रहे थे। सत्संगी भक्त उनके इर्दगिर्द बैठे थे। मैं अपने मित्र के साथ पण्डित जी के उपदेश श्रवणार्थ पाली के इस आश्रम में पहुँचा। अचानक देखा कि पं.जी के अद्वैत वेदान्त खण्डन के व्याख्यानों से रोषाविष्ट एक गरीबदासी सम्प्रदाय का ग्रामीण साधु हाल में आकर पं.जी से हुज्जत करने लगा। पहले तो बुद्धदेव जी ने उसे शान्त होकर अपनी शंका प्रस्तुत करने के लिए कहा किन्तु जब देखा कि विपक्षी तो मात्र वितण्डा करना चाहता है, सत्य की जिज्ञासा उसमें लेशमात्र भी नहीं है तो पं.जी शिवगण वीरभद्र की भाँति गर्जना करते हुए शंकर मत के उग्र खण्डन में प्रवृत्त हुए और उन्हंने ब्रह्मसूत्र के अप

शूद्राधिकरण पर लिखे गए शंकर के अनुदार विचारों पर निर्मम प्रहार किया। पं. बुद्धदेव का वह लोमहर्षक अद्भुत रौद्ररूप था। इसके उत्तर में उस साधु को तो मौन धारण करना ही शेष रहा।

इसके बाद तो अजमेर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले ऋषि मेले में उनके सारगर्भित ऊहायुक्त, शास्त्रों की अपूर्व व्याख्यायुक्त व्याख्यानों को सुनने के अनेक अवसर मिले। मैंने स्वचरित 'कृष्णचरित' की पाण्डुलिपि के कुछ अंश उन्हें सुनाए और प्रशस्तिपूर्ण सम्मति प्राप्त की। यही वह समय था जब 'सरिता' ने रतनलाल बन्सल के गोवध के समर्थन में विवादास्पद लेख छापे और आर्य शास्त्रों में गोवध के समर्थक विवादास्पद वाक्य ढूँढ निकाले। विद्यालंकार जी ने बन्सल के अनर्गल आक्षेपों के खण्ड्न में व्याख्यान श्रृंखला प्रस्तुत की। उनका जोर इस बात पर था कि इसे विधि की बिडम्बना की कहना चाहिए कि जिस अग्रवाल वैश्य जाति में जन्मे रतनलाल के पूर्वजों ने गोमांस तो दूर, साधारण मांस का भी सेवन नहीं किया, आज वह अपने आर्य पूर्वजों को गोघातक तथा गोमासाहारी सिद्ध करने लगा है। इस शास्त्र मन्थन को उन्होंने अपनी पुस्तिका 'किसकी सेना में भर्ती होगे-कंस की या कृष्ण की ?' में प्रस्तुत किया। उनकी यह पुस्तिका बहुत चर्चित हुई।

मैं दयानन्द भवन दिल्ली के उस प्रसंग को नहीं भूला हूँ जब सार्वदेशिक सभा के इस भवनस्थ कार्यालय की सीढ़ियों को चढ़ते समय मैंने पं. जी को ऊपर की मन्जिल से उतरते देखा। यकायक मैंने उनसे पूछ लिया- पंडित जी ! आपने मुझे पहचाना ?'' उनका विदग्धतापूर्वक उत्तर था- ''जिनके कन्धों पर हमें जाना है, भला उन्हें नहीं पहचानूँगा !'' नई पीढ़ी के प्रति ऐसा अकृत्रितम स्नेह तथा वात्सल्य की वर्षा करने वाले विद्वान् अब कहाँ मिलेंगे ? पं.बुद्धदेव वेदों के अनेक विवादास्पद सूक्तों की सारगर्भित, कर्तसम्मत तता आश्वस्त करने वाली व्याख्या जब रोचक और प्रभावोत्पादक सैली में करते थे तो श्रेतागण चमत्कृत होते, विस्मयान्वित होते तथा उन्हें अपूर्व बौद्धिक तृप्ति मिलती। इन्हीं व्याख्यानों में वे बेबर, मैक्समूलर, विल्सन, मोनियर विलियम्स आदि पाश्चात्यों द्वारा की गई वेद व्याख्याओं की अयथार्थता को स्पष्ट करते तता इन विदेशी प्राच्य विद्याविदों को चुनौती भरे स्वर में अपनी व्याख्याओं को सत्य सिद्ध करने के लिए ललकारते। १९६६ में स्वामी व्रतानन्द जी ने स्वस्थापित गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में बृहद् वेद सम्मेलन आयोजित किया। पं.बुद्धदेव प्रमुख वक्ता के रूप में आमन्त्रित थे। उस समय में गवर्नमेन्ट कॉलेज पाली में हिन्दी विभाग का अध्यक्ष था। जोधपुर के ठेकेदार श्री केशवसिंह की कार में पंडित जी के साथ हम चित्तौड़ गए। जब देसूरी के पर्वतीय मार्ग से हम लौटे तो सारे रास्ते विद्यालंकार जी के द्वारा किए गए शास्त्रार्थों के रोचक संस्मरण का आनन्द लेते रहे। काश ! ये संस्मरण लेखबद्ध कर लिए जाते तो शास्त्र-विमर्श विषयक वाङ्मय की अपूर्व थाती बनते। पाली में आकर पं. जी किन्चित् अस्वस्थ हो गए और उन्हें एक दो दिन के लिए रुकना पड़ा। स्वस्थ होने पर मैंने भारतीय इतिहास पर उनका एक व्याख्यान अपने कॉलेज के स्टॉफ के बीच कराया। अपने-अपने विषयों के मूर्धन्य ज्ञाता प्रोफेसरों के लिए यह पहला अवसर था जब उन्होंने भारतीय इतिहास की ऐसी अपूर्व व्याख्या सुनी। इन लोगों का कहना था कि ऐसा समाधानकारक व्याख्यान पहले कभी नहीं सुना।

एक ऋषि मेले में पंडित जी ने स्वामी व्रतानन्द जी से चौथे आश्रम की दीक्षा ले समर्पणानन्द नाम ग्रहण किया। शतपथ ब्राह्मण पर उनका विशेष अधिकार तथा अध्ययन था। वर्षों पूर्व जब वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) की सेवा में थे, उन्होंने सभा के मुखपत्र 'आर्य' में अथर्ववेद का आंशिक भाष्य तथा शतपथ ब्राह्मण पर अपनी स्वोपज्ञ व्याख्या लिखना आरम्भ किया था। देश-विभाजन के पश्चात् 'आर्य' का मासिक प्रकाशन बन्द हो गया। पं.बुद्धदेव भी सभा की सेवा से मुक्त हो गए। उन्होंने 'कायाकल्प' जैसा कालजयी ग्रन्थ लिखकर वर्णाश्रम के यथार्थ रूप को प्रचारित करने के लए एक संस्था को भी जन्म दिया। किन्तु निरन्तर व्याख्यान देते हुए अविरत भ्रमण और देशाटन ने उन्हें जमकर लेखन कार्य करने की सुविधा नहीं दी। फलतः वे शतपथ पर अपना भाष्य पूरा नहीं कर पाए। वर्षों बाद स्वामी दीक्षानन्द के पुरुषार्थ एवं प्रेरणा से मेरे शोध-शिष्य स्व. वेदपाल सुनील (वर्णी) ने बुद्धदेव जी के इस शतपथ-भाष्य का स्वल्प सम्पादित अंश तैयार किया। ऋग्वेद के दसों मण्डलों में प्रतिपाद्य विषय की एकतानता द्विणिसद्ध करने के लिए उन्होंने 'मणिसूत्र' नामक ग्रन्थ लिखा जो उनके देहान्त के बाद छपा। मैंने इसे पढ़ा किन्तु इसमें लेखक की मात्र ऊहा ही मुझे दिखाई दी। इससे ऋग्वेद के कथ्य का कोई सन्तोषप्रद रूप पाठक के सामने नहीं आता। १९६८ में वे दिवंगत हो गए, किन्तु उनकी अपूर्व सारस्वत साधना, प्रखर पाण्डित्य तथा अद्वितीय वैदुष्य की कहानी ही शेष रही। प्रखर मेधा का घनी यह व्यक्ति कलाप्रेमी सहदय रसिक भी था। संस्कृत तथा हिन्दी में उन्होंने उत्कृष्ट काव्य रचना की है जो पृथक् विवेचना की अपेक्षारखती है। वे गायक तथा नर्तक भी थे, यद्यपि उनके इन कलाओं में निष्णात होने के साक्षी अब तो विरले ही होंगे।

धर्मरक्षक वीर बन्दा वैरागी

-सुन्दर दास

भारत वर्ष का इतिहास वीर पुरुषों की क्रान्तिकारी गाथाओं से भरा पड़ा है। इन महापुरुषों में वीर बन्दा वैरागी का स्थान बहुत ऊँचा है। वीर वैरागी के समान, भारत क्या दुनिया के किसी भी देश के इतिहास में ऐसी वीर गाथा नहीं मिलती, जो इनके जीवन में मिलती है। वह एक तरफ तो सेनापति, संगठनकर्त्ता थे, दूसरी तरफ एक राजपुरुष और उत्तम न्यायकर्त्ता थे। इन गुणों के कारण आज भी वे हमारे हृदय के सम्राटों के सम्राट् है। उनके जीवन के बारे में जरा ध्यान दें। वीर बन्दा वैरागी कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे। उनका वीर पुरुष के रूप में ही बहुत ऊँचा स्थान नहीं है, वरन् वे ईश्वर-भक्ति, ज्ञान और धार्मिक शक्ति से भी भरपूर थे और राजसत्ता प्राप्त करने पर भी उन्होंने वैराग्य को नहीं छोड़ा।

वीर वैरागी का जन्म कश्मीर के पुंछ जिला के राजौरी राज्य में एक किसान डोगरा राजपूत राजा श्री रामदेव के घर २७ अक्तूबर, सन् १६७० को हुआ था।

इनका बचपन का नाम लक्ष्मण देव रखा गया। वे बचपन से ही चन्चल स्वभाव के थे। इनका क्रीडास्थल घर-आंगन न रहकर जंगल बना। जब वे १४ वर्ष के हुए तो एक दिन शिकार करते समय उनके बाण से एक हिरणी की हत्या हो गई। हिरनी के पेट में से दो बच्चे निकले, जो उसी समय तड़प-तड़प कर मर गए।

यह देखकर लक्ष्मण को बहुत दुःख हुआ और इस दुःख के कारण उन्होंने घरबार छोड़ दिया। वैराग्य से भरे उन्होंने साधु वैरागी जानकी दास के पास जाकर वैराग्य ज्ञान की दीक्षा ली और वहाँ उनका नाम माधो दस वैरागी रखा गया। इन्होंने वैराग्य धारण कर ईश्वर भक्ति में सालों तपस्या की।

फारूख शाह, वैरागी और उसके साथियों में फूट डालने में सफल हो गया। बन्दा के कुछ साथी उससे अलग होगए और उन्होंने बादशाह से मिलकर बन्दा की शक्ति को कमजोर कर दिया। वैरागी ने उन्हें बहुत समझाया कि बादशाह तुमको धोखा दे रहा है और वह तुम्हारा वध भी कर सकता है। इससे देश को भारी क्षति होगी। परन्तु वे लोग लोभ-लालच के जाल में फँस चुके थे। इस हरकत से देश को भारी हानि हुई।

इसके बाद वे तीर्थ-यात्रा के लिए हरिद्वार, बद्रीनाथ, काशी होते हुए दक्षिण में गोदावरी नदी के तट पर नान्देड़ पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपना एक स्थायी आश्रम बनाया। वैरागी की तपस्या का प्रभाव इतना बढ़ गया कि इनका नाम सारे क्षेत्र में विख्यात हो गया। वहाँ के लोगों में इनके प्रति अटूट श्रद्धा हो गई। वे गरीबों और वीरों की सहायता गई। वे गरीबों और बीमारों की सहायता करते। वहाँ आकर लोग श्रद्धा से नतमस्तक होते। श्री माधो दास वैरागी इतने विख्यात हो चुके थे कि हजारों की संख्या में लोग इनके दर्शन करने आते। वे उन लोगों को सद्भावना सम्मान देते, लेकिन पाखण्डियों को आश्रय नहीं देते थे। वैरागी सांसारिक मोह-माया छोड चुके थे, लेकिन गुरु गोबिन्द सिंह जी महाराज के साथ उनकी भेंट ने उनकी जीवन-धारा को बदल दिया। गुरु महाराज जी के साथ उनकी भेंट १७०८ ई. में हुई। गुरु जी ने बंदा को पंजाब की परिस्थितियाँ बताई और उन्हें उत्तर भारत जाने की प्रेरणा दी। वैरागी यह सब सुनकर द्रवित हो उठे और उत्तर की ओर जाने को तैयार हो गए। इस समय उनकी बचपन की शिक्षा काम आई। उस शिक्षा के कारण वे न सिर्फ एक वीर साहसी योद्धा थे, बल्कि कुशल सेनापति भी थे। गुरुजी ने उन्हें २५ व्यक्ति, एक तलवार और पाँच तीर दिए। उनके कुशल सेनापति होने का भी प्रमाण है कि उन्होंने पूरी योजना तैयार की कि कहाँ से सेना का गठन किया जा सकता है और साधन जुटाए जा सकते हैं। वे भरतपुर से राजस्थान होते हुए शक्तिशाली सेना लेकर पंजाब पहुँचे और शत्रु पर अचानक टूट पड़े। जिन लोगों ने गुरुजी को त्रस्त दिया था, उन सब से बन्दा ने चुन-चुनकर बदला लिया।

उस वीर पुरुष ने धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इन चारों लक्ष्यों पर चलकर अपना जीवन सार्थक कि। धर्म-मर्यादा के बन्धन में बन्ध कर इस परम्परा को आगे बढ़ाया। धर्म के कन्टीले धरातल पर पांव रखकर चलने से जो पीड़ा हुई, उसे वीर बन्दा वैरागी ने धैर्य से सहा। धार्मिक प्रवृत्ति होने के कारण इस वीर पुरुष ने धर्म धैर्य और रूपी अग्निकुण्ड में अपना जीवन होम कर दिया। उस होम में अग्नि रूपी ज्वाला की लपटें आज की दिखाई देती हैं।

उन्होंने फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, भिवानी और सोनीपत पर विजय प्राप्त की। इसके बाद सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई और गुरुजी के साहबजादों का बदला लिया। वहाँ के सूबेदार वजीर खाँ और दीवान सुच्चानन्द को समाप्त कर दिया, क्योंकि वजीर खाँ ने हीगुरु गोविन्द सिंह जी के पुत्रों के दवारों में चुनने के लिए आज्ञा दी थी और दीवान सुच्चानन्द ने सूबेदार को

सलाह दी थी कि दुश्मनों के बच्चों को समाप्त करना अच्छा है, ताकि आगे से भय न रहे। इसके बाद वैरागी ने जलालुद्दी के गाँव पर हमला किया। उसके दस हजार सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया तथा सढोरा पर विजय पाई।

इस प्रकार वैरागी ने आठ साल तक लगातार युद्ध किया और शत्रुओं से बदला लिया। सन् १७१६ ई. ने हिमाचल के राजा उदय सिंह की पुत्री से विवाह किया। विवाह के उपरान्त भी उन्होंने धर्मयुद्ध जारी रखा। जब दिल्लीके बादशाह फतेह शाह ने देखा कि बंदा ने पंजाब में अपनी शक्ति बढ़ा ली है और छोटे क्षेत्र फतह कर लिए हैं, तो बादशाह को भय हुआ कि कहीं वैरागी दिल्ली पर हमला न कर दे। इस भय को दूर करने के लिए उसने अपने दरबारियों को बुलाया और कहा कि जो वैरागी को पकड़ कर लाएगा, उसको बड़ी जागीर दी जाएगी, लेकिन किसी की हिम्मत न हुई कि वो बन्दा वैरागी को पकड़ सके।

अन्त में यह निश्चय हुआ कि वैरागी के साथियों में फूट डाली जाए। इस षड्यन्त्र में फारूख शाह, वैरागी और उसके साथियों में फूट डालने में सफल हो गया। बन्दा के कुछ साथी उससे अलग से गए और उन्होंने बादशाह से मिलकर बन्दा की शक्ति को कमजोर कर दिया। वैरागी ने उन्हें बहुत समझाया कि बादशाह तुमको धोखा दे रहा है और वह तुम्हारा वध भी कर सकता है। इससे देश को भारी क्षति होगी। परन्तु वे लोग लोभ-लालच के जाल में फँस चुके थे। इस हरकत से देश को भारी हानि हुई। वीर वैरागी का बना बनाया काम बिगड़ गया। घर की फूट के कारण सारे राष्ट्र को तबाही का सामना करना पड़ा। शक्ति कम होने के कारण वीर वैरागी पकड़ लिए गए और उनको दिल्ली में कैदी बनाकर लाया गया। उनको अनेक कष्ट दिए गए, यहाँ तक कि उनके बच्चे का कलेजा निकाल कर उनके मुँह में ठूँसा गया, लेकिन बन्दा ने मुँह से उफ तक न की और न ही उनके पाँव डगमगाए।

आज ३२० वर्ष से भी अधिक समय हो गया है लेकिन इतिहास साक्षी है कि जहाँ यह वीर योद्धा संन्यासी, तपस्वी और वैरागी थे, वहाँ वे देश तथा समाज के सुधारक भी थे। उन्होंने जागीरदारी प्रथा को खत्म किया, सरहिन्द को फतह करके लोहगढ को राजधानी बनाया। तत्कालीन इतिहासकारों ने उन्हें एक वीर योद्धा माना है। उन्होंने देश को विदेशी हकूमत से आज़ाद कराने के लिए जैसे को तैसा वाली नीति पर चलकर जालिमों से बदला लेते हुए जीवनभर संघर्ष किया।

भारत माँ के सपूत ने धर्मयुद्ध किया। इन्होंने जो रास्ता अपने लिए निर्धारित किया, उस पर अन्त तक चलते रहे। बड़ी से बड़ी कठिनाई में भी इन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग को कभी नहीं त्यागा। इतिहास साक्षीहै कि इन्होंने भक्तिमार्ग और राजमार्ग को अपनाया तथा भारत की गुलामी की जन्जीरों को काटते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। इन्होंने अपने सात सौ चालीस साथियों के साथ दिल्ली के चाँदनी चौक में अपना बन्द-बन्द कटवा कर अपना और अपने साथियों का जीवन सार्थक कर दिया। इनके जीवन के बलिदान से राष्ट्र में नई जागृति आई और सम्मान गौरव की चेतना जागी जिससे प्रेरणा पाकर देशवासी स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी बने। परिणाम स्वरूप सन् १७५७ ई. की पलासी की लडाई से लेकर १८५७ की क्रान्ति तक स्वतन्त्रता संग्राम ने विकराल रूप धारण कर लिया।

इसके पश्चात् विदेशी मुगल शासन जहाँ १७५७ ई. में समाप्त हो चुका था, वहाँ १८५७ में अंग्रेजी शासन भी हिल गया था। यह उनकी प्रेरणा का परिणाम था। १८५७ से १९४७ ई. तक स्वतन्त्रता की क्रान्ति का दौर चला और देश स्वतन्त्र हुआ। यह इन्हीं जैसे महापुरुषों के बलिदानों का ही परिणाम है।

उस वीर पुरुष ने धर्म, अर्थ, काम मोक्ष इन चारों लक्ष्यों पर चलकर अपना जीवन सार्थक किया। धर्म-मर्यादा के बन्धन में बन्ध कर इस परम्परा को आगे बढ़ाया। धर्म के कन्टीले धरातल पर पांव रखकर चलने से जो पीड़ा हुई, उसे वीर बन्दा वैरागी ने धैर्य से सहा। धार्मिक प्रवृत्ति होने के कारण इस वीर पुरुष ने धर्म धैर्य और रूपी अग्निकुण्ड में अपना जीवन होम कर दिया। उस होम में अग्नि रूपीज्वाला की लपटें आज भी दिखाई देती हैं।

वीरों में वीर बन्दा अग्रगण्य हैं। चरित्र के धनी, ये कुलश्रेष्ठ और धर्मदाता वीर हैं। वे कर्मसिद्धि के लिए शरीर की चिन्ता से दूर हैं। उनका समस्त जीवन वीरत्व का सार है। राष्ट्र के लिए हँसते-हँसते प्राण दिए। उनके हृदय में राष्ट्रभक्ति और धर्म की प्रबल तरंगे तरंगित होती रहती थीं। तुर्क यवनों के दुराचारों से पीड़ित भारत का उद्धार करने के लिए वे सम्पूर्ण जीवन कटिबद्ध रहे। उनका उद्देश्य भी महान् था। तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थों से वे कोसों दूर रहे। मातृभूमि के लिए उन्होंने अपने आपको होम कर दिया।

डाकू आर्य संन्यासी बन गया

सन् १९७६ में पाणिनि कन्या गुरुकुल, बनारस की आचार्या प्रज्ञा देवी को बोलथरा रोड, जिला आजमगढ़, उत्तर प्रदेश के एक स्वर्णकार ने अपने ग्राम में चतुर्वेद परायण यज्ञ सम्पन्न करने हेतु आमन्त्रित किया था। प्रज्ञा देवी के साथ सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ब्रजपाल जी कर्मठ एवं पंडित ओम प्रकाश जी वर्मा को भी आमन्त्रित किया गया था। कार्यक्रम के अन्तिम दिन एक विशेष घटना घटित हुई। उस दिन कार्यक्रम में एक डाकू कन्धे पर बन्दुक टांगे हुए वहां पर आकर बैठ गया। वहां के मूल निवासियों ने तो उसे पहचान लिया पर उपदेशक विद्वान उसे न पहचान पाएं। इस अवसर पर पंडित ओमप्रकाश जी ने संयोगवश पानीपत हरियाणा में घटित एक घटना का वर्णन किया जिसमें पंडित गणपति शर्मा एक बार आर्य समाज के उत्सव में उपदेश देते हुए कह रहे थे कि मनुष्य को अपने किए हुए कर्मों का फल भोगना ही पड़ता हैं। शुभकर्मों का फल शुभ और अशुभ कर्मों का फल अशुभ ही भोगना पड़ता हैं। ईश्वर किसी के किए पापों का फल अवश्य देता हैं। किसी भी व्यक्ति के पाप क्षमा नहीं करता। सत्संग तथा स्वाध्याय से ईश्वर की न्याय व्यवस्था को भली भान्ति समझकर यदि कोई मनुष्य पापकर्म करना छोड़ देता हैं तो भविष्य में पापों से मुक्त हो जाता हैं। परन्तु पूर्व में कर चुके पापों के फल से मुक्त नहीं हो सकता हैं उसे उसका फल भोगना ही पड़ता हैं। उस प्रवचन को सुनने वालों में उस दिन श्रोताओं में मुगला नामक एक डाकू भी था। उस पर पंडित गणपति शर्मा के उपदेशों का अद्भुत प्रभाव पड़ा व उसने डाके डालने बन्द करके शुद्ध व पवित्र जीवन अपना लिया। पं. जी के बाद महाविदुषि प्रज्ञादेवी ने मन्त्रों की व्याख्या करते हुए पापों से बचने व ईश्वर की शुद्ध न्याय व्यवस्था को समझकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी व प्रभावशाली शैली में उन्होंने कहा अवश्यमेव भोक्तव्यम कृतं कर्म शुभ अशुभम अर्थात् कृत पापों के फल भोगने से आज तक कोई जीव बचा नहीं तथा न ही भविष्य में कोई बच सकेगा।

प्रज्ञादेवी जी के उपदेश के खत्म होने तक सभा में अनेक श्रोतागण वहां से डाकू के भय से चले गए परन्तु वह डाकू कार्यकर्म खत्म होने पर ही गया। उसके जाने के बाद आयोजकों ने बताया की यहाँ जो बन्दूकधारी व्यक्ति आज आया था वह इस क्षेत्र का प्रसिद्ध सुदामा नामक डाकू था।

कुछ दिनों के पश्चात् वही सुदामा बहन प्रज्ञादेवी आचार्या जी के गुरुकुल के प्रवेश द्वार पर आकर खड़ा हो गया व पुकारने लगा बाई जी ! बाई जी ! गुरुकुल का द्वार खोला गया तो प्रज्ञा देवी जी ने पूछा कहो- क्या काम हैं ? कहाँ से आए हो ? कौन हो तुम ? वह व्यक्ति प्रज्ञादेवी जी के चरणों में प्रणाम करके बोला'- मैं सुदामा डाकू हूँ। मैंने बोलथरा रोड में आपके कार्यकर्म को देखा-सुना था। मैं अपने घर में भी अब हवन कराना चाहता हूँ व उन पंडित जी से मिलना व उनके उपदेश भी सुनना चाहता हूँ, जिन्होंने कर्मो का फल भोगना ही पड़ेगा, यह बताया था। आपके उपदेश का भी मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा था। प्रज्ञा देवी ने पूछा की आप कब यह कार्य करवाना चाहते हैं ? सुदामा ने कहाँ-आज से ६-७ मास बाद, मई या जून में।

प्रज्ञा जी ने स्वीकृति दे दी। अपने घर लौटकर सुदामा ने अपने खेतों में हल चलाया व गायत्री मन्त्र का प्रतिदिन पाठ करने लगा। तब नवम्बर का महिना चल रहा था। गेहूं की फसल उन्हीं दिनों में बोई जाती हैं। सुदामा ने डाके डालने त्यागकर इसी काम में स्वयं को व्यस्त कर लिया। अप्रैल मास में जब फसल घर आ गई तो निश्चित दिनों में मई में विद्वान उसके घर पर पहुँच गए। वहां दोनों समय प्रतिदिन हवन और उपदेश तथा भजनों का कार्यक्रम भी चला। भोजन में रोटी के साथ केवल घिया (लौकी) ही हर रोज दी जाती थी। रात को दूध जरूर दिया जाता था। ओमप्रकाश वर्मा जी ने सुदामा से पूछा कि दोनों समय घिया खिलाने के पीछे क्या रहस्य हैं। सुदामा ने कहाँ की मेरे घर में जो भी सामान हैं वह सब डाके डालकर ही प्राप्त किया गया हैं। उसे अपने उपदेशकों को खिलाने का मेरा मन आज्ञा नहीं दे रहा हैं। मेरी अपनी मेहनत से खेतों में उपजाया हुआ गेहू और घिया से विद्वानोंका सत्कार किया हैं और मेरी गौ माता भी अभी ही ब्याही हैं जिसका दूध आपको पिलाता हूँ।

यज्ञ के कार्यक्रम के सम्पन्न होने के पश्चात् सुदामा ने विद्वानों को दक्षिणा देनी चाही तो विद्वानों ने कहाँ कि सुदामा जी आपको पाकर हम धन्य हो गए हैं। आप आर्य बने यहीं हमारे लिए दक्षिणा हैं। सुदामा ने यह कह कर कि मैंने सुना हैं की बिना दक्षिणा के हवन आदि व्यर्थ हैं इसलिए विद्वानों को दक्षिणा अवश्य दी। कुछ दिनों बाद सुदामा डाकू वाराणसी में कुटिया बनाकर अगले कुछ वर्षो तक प्रज्ञा देवी से संस्कृत सीखता रहा। कालान्तर में उसने सन्यास ग्रहण कर स्वामी देवानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्धि पाई।

इतिहास साक्षी हैं बुराई के मार्ग पर चल रहे अनेक व्यक्ति सत्य मार्ग पर चल रही श्रेष्ठ आर्य आत्माओं के संसर्ग से न केवल दोषों से मुक्त हुए अपितु अनेकों के मार्गदर्शक भी बने। स्वामी श्रद्धानन्द ने जब गुरुकुल कांगरी की स्थापना करी तो एक समय कुछ डाकू लूटपाट के इरादे से गुरुकुल में आ गए थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने अत्यन्त दिलेरी से गुरुकुल का उद्देश्य उन्हें समझाया तो वे न केवल गुरुकुल को बिना हानि पहुंचाए वापिस चले गए अपितु गुरुकुल को दान भी देकर गए थे।

स्वामी दर्शानानद जी महाराज के उपदेशों को सुनकर पीरु सिंह नामक डाकू ने हिंसा का परित्याग इसी प्रकार कर दिया था और कालान्तर में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिए गुरुकुल मतिन्डु की स्थापना की थी। इसी प्रकार की घटनाए पंडित लेखराम, भाई परमानन्द जी के जीवन में भी सुनने को मिलती हैं।

इस लेख का मुख्य उद्देश्य यह सन्देश देना हैं की मनुष्य ने अपने जीवन में चाहे पूर्व में कितने भी अशुभ कर्म किए हो परन्तु जब भी उसे श्रेष्ठ मार्ग ग्रहण करने का अवसर मिले तो उसे तत्काल उस मार्ग को ग्रहण कर लेना चाहिए।

-साभार-सोशल मीडिया

స్వామి దయానంద్ యొక్క ఆధ్యాత్మిక ప్రతిభ

- రెవరెండ్ వల్సన్ తంపు

మహర్షి దయానంద్ యొక్క గౌరవప్రదమైన జ్ఞాపకాలను పునరుద్ధరించడానికి మరియు ఆర్య సమాజ ఉద్యమాన్ని పునరుద్ధరించడానికి ఉద్దేశించిన ఈ సమావేశంలో ప్రసంగించడానికి నన్ను పిలవడం నాకు గౌరవంగా అనిపిస్తుంది. ఈ సందర్భంగా నేను ఒక గొప్ప నమ్మకంతో పాటు లోతైన ఆందోళనను కూడా పంచుకుంటాను.

మొదటిది, నమ్మకం. మహర్షి దయానంద లో మనకు అరుదైన ఆధ్యాత్మిక మేధావి ఉన్నారని నేను నమ్ముతున్నాను, ఆయన దృష్టి మరియు లక్ష్యం భారతీయ సంబంధంలో అపూర్వమైన ఆధ్యాత్మిక కదలికను ప్రతిబింబిస్తాయి. ఈ ఉద్యమం యొక్క ఆధ్యాత్మిక సారాన్ని పునరుద్ధరించడం ఆర్య సమాజం పట్ల శ్రద్ధ వహించే వారికి అత్యవసరమని నేను అంతే నమ్ముతున్నాను. ఆర్య సమాజం, దాని ప్రామాణిక వెర్షన్‌లో, మతతత్వం, కులతత్వం మరియు మతపరమైన అస్పష్టత రూపంలో మన చుట్టూ మనం చూస్తున్న ఆధ్యాత్మిక క్షీణత మరియు దిశానిర్దేశం లేకపోవడానికి ప్రభావవంతమైన విరుగుడు, ఇవన్నీ భారతదేశం యొక్క ముఖాన్ని నల్లగా చేస్తాయి మరియు ఆమె నిజమైన గొప్పతనాన్ని ఊపిరి ఆడకుండా చేస్తాయి.

రెండవది, ఆందోళన. ఈ కంటెంట్‌లో నా ఆందోళన పైన చెప్పినట్లుగా నా నమ్మకం నుండి పుట్టింది. విచారకరంగా, గత శతాబ్దంలో ఆర్య సమాజం దాని ఆధ్యాత్మిక బావుల నుండి దూరంగా వెళ్ళిపోయింది. అది దాని ప్రత్యేకతను వృధా చేసి, దాని లక్ష్యాన్ని కోల్పోయినట్లు అనిపిస్తుంది. ఈ ప్రత్యేకమైన ఉద్యమం భారతదేశ ఆధ్యాత్మిక భౌగోళికం నుండి పారిపోయి నిర్మూలించడానికి ఉద్దేశించిన శక్తులచే అధిగమించబడినట్లు కనిపిస్తుంది. ఈ విషయంలో కేవలం మూడు అంశాలను మాత్రమే పరిశీలిద్దాం. ఈ ఉద్యమం యొక్క ప్రధాన ఆధ్యాత్మిక ఎజెండా-అంటే, భారతీయ సమాజాన్ని కులం మరియు మూఢనమ్మకాల నుండి విముక్తి చేయడం మరియు దాని గొప్పతనాన్ని పెంచడం-దాదాపుగా మరచిపోయింది. మన సమాజంలో అది మేల్కొల్పిన మేధో మరియు సాంస్కృతిక శక్తి ఇకపై ఉద్యమం యొక్క బలమైన శక్తిగా లేదు. నేను కలిసిన అనేక మంది ప్రముఖ హిందూ నాయకులు మరియు ఆలోచనాపరులు, విచారకరంగా, మాజీ ఆర్య సమాజీలు. భారతీయ మతతత్వం యొక్క స్తబ్దుగా ఉన్న కొలనులో మేధో మరియు ఆధ్యాత్మిక ఉద్ధృతిని ఉత్ప్రేరకపరచడం ద్వారా సమాజం గతంలో మన దేశానికి గొప్ప సేవ చేసింది. ఇందులో ఒక అద్భుతం ఇప్పటికీ అలాగే ఉంది.

మూడవది మొదటి రెండింటి కంటే చాలా ముఖ్యమైనది, మరియు రెండింటికీ మూలం కావచ్చు. మరియు అది ప్రస్తుత కాలంలో ఆర్య సమాజ ఉద్యమాన్ని బానిసలుగా చేసినట్లు కనిపించే గుర్తించదగిన పలాయనవాద లక్షణం. ఈ పరిస్థితిని సరైన దృక్పథంలో చూడటానికి, కేవలం మతతత్వానికి మరియు నిజమైన ఆధ్యాత్మికతకు మధ్య వ్యత్యాసాన్ని మనం లెక్కించాలి. మతతత్వం, అన్ని సమయాల్లో, పలాయనవాదానికి గురవుతుంది. ఇది సాధారణంగా, దేవుని అనుగ్రహాన్ని పెంచడం మరియు దైవిక అసంతృప్తిని తగ్గించడం అనే రెండు ఉద్దేశ్యంతో దేవునిని బాగా హాస్యాస్పదంగా ఉంచడానికి ఆసక్తిగా ఉన్న పవిత్రమైన స్వార్థం ద్వారా నడపబడుతుంది. అటువంటి మతతత్వం తప్పనిసరిగా కిరాయి మరియు లావాదేవీలది, లాభం మరియు నష్టాల గణనల ద్వారా నడపబడుతుంది. సమాజంలో ఆధ్యాత్మిక విలువలు ప్రబలంగా ఉండేలా చేయడానికి వాస్తవాల ప్రపంచాన్ని నిమగ్నం చేయాలనే ఆత్రుతతో ఇది గుర్తించబడదు. ఆధ్యాత్మికత దీనికి ఖచ్చితమైన వ్యతిరేకం. ఇది వ్యక్తిగత లేదా స్వార్థ ప్రయోజనాల కంటే ఉన్నతమైన దాని ద్వారా రూపొందించబడిన ఇచ్చిన సందర్భం యొక్క వాస్తవాలతో నిమగ్నమవ్వడం. అందుకే ప్రేమ, కరుణ, సత్యం మరియు న్యాయం వంటి సార్వత్రిక విలువలు ఆధ్యాత్మికతకు ప్రాథమికమైనవి, అయితే కేవలం మతపరమైన సందర్భంలో, మనం వారికి పెదవి విప్పవచ్చు.

ఈ దేశం సృష్టించిన అనేక మత నాయకులలో స్వామి దయానంద్ ఒకరు అయితే, ఆయన సంస్కర్త మరియు సామాజిక కార్యకర్త కాదు. నిస్సందేహంగా, ఆయన నిరూపించబడిన ఆధ్యాత్మిక దిగ్గజం కాదు. దయానంద్‌ను ఆధ్యాత్మిక మేధావిగా నేను ఎందుకు పరిగణిస్తాను? అన్నింటిలో మొదటిది, ఆయన మతంలో హేతుబద్ధత యొక్క విజయాన్ని సూచించాడు. ప్రజాదరణ పొందిన ఊహకు విరుద్ధంగా, హేతువు నిజమైన మతం యొక్క వెలుగు. ఆధ్యాత్మికంగా నిరక్షరాస్యులు మాత్రమే హేతువు మరియు విశ్వాసాన్ని వ్యతిరేకతలుగా చూస్తారు. బదులుగా, అవి ఆధ్యాత్మికత యొక్క రథాన్ని లాగుతున్న రెండు గుర్రాలు. విశ్వాసం ద్యోతక రంగానికి చెందిన సత్యాలు మరియు అంతర్దృష్టులను అంతర్లీనంగా పొందుతుంది మరియు ప్రాప్తి చేస్తుంది. కానీ ద్యోతక పంటను హేతువు కడుపులో జీర్ణించుకోవాలి. హేతుబద్ధం కాని దానికి మతం యొక్క సంగ్రహాలయంలో స్థానం ఉండకూడదు. దీనిని పట్టుబట్టకపోతే, మతం త్వరగా అంధ విశ్వాసం, మూఢనమ్మకం మరియు అస్పష్టతలోకి తిరిగి వెళుతుంది.

తమ మతాలను తీవ్రంగా పరిగణించే వారందరికీ మహర్షి దయానందుడు ఒక ఆదర్శప్రాయుడు. దయానందుడికి ముందు రాత్రి విగ్రహాలకు అర్పించిన ఆహారాన్ని ఎలుకలు తినడం ఎంతమంది యువకులు చూసి ఉండవచ్చు! వారిలో ఒకరికి దాని తార్కిక ముగింపు వరకు చదవడానికి మరియు దాని అర్థాన్ని అనుసరించడానికి ధైర్యం లేదా ఆత్మ స్వేచ్ఛ ఎందుకు వచ్చింది? చాలా మటుకు, వారు తమ సనాతన మతపరమైన పరిస్థితుల ద్వారా అంధులయ్యారు మరియు హేతుబద్ధంగా ఆలోచించలేక పోయారు. దయానందుడికి చేసినట్లుగానే, ఆధ్యాత్మికత మనకు ధైర్యాన్ని ఇస్తుంది, అంధ విశ్వాసం యొక్క జైలు నుండి బయటపడటానికి మరియు అంతర్గత స్వేచ్ఛ యొక్క రహస్యమైన తార్కికం మరియు విశ్లేషణ కోసం దేవుడు ఇచ్చిన సామర్థ్యాన్ని

ఉపయోగించుకోవడానికి. ఈ ఆధ్యాత్మిక విధి పూర్తిగా నిర్వర్తించబడకపోతే, మతాన్ని విముక్తి మరియు సాధికారత యొక్క ఏజెంట్‌గా కాకుండా దోపిడీ సాధనంగా మార్చడంలో మనం ఒక పార్టీ అవుతాము.

రెండవది, ప్రతి నిజమైన ఆధ్యాత్మిక నాయకుడు కూడా మత సంస్కర్త. మత రంగంలో రెండు రకాల నాయకులు ఉంటారు. మత నాయకులను మనం ఎక్కువగా సనాతన ధర్మం మరియు యథాతథ స్థితి యొక్క సంరక్షకులుగా తెలుసుకుంటాము. వారి ఎజెండా ఏమిటంటే, వారు ఏదో ఒక విధంగా లేదా మరొక విధంగా ప్రయోజనం పొందే ప్రస్తుత అధికార నిర్మాణాలకు మద్దతు ఇవ్వడం మరియు చట్టబద్ధం చేయడం. వారికి హేతుబద్ధమైన ఆలోచనకు పెద్దగా ఉపయోగం ఉండదు మరియు తరచుగా సత్యం, న్యాయం మరియు కరుణ వంటి విలువల పట్ల ఉదాసీనంగా ఉంటారు. వారు మతం యొక్క యంత్రాంగాన్ని రక్షించడానికి, సంరక్షించడానికి మరియు కీర్తించడానికి చాలా ఆసక్తిగా ఉంటారు, వారు మతం యొక్క అర్థానికి అంధులు అవుతారు. వారు మత స్థాపనను దేవుడిగా తప్పుగా భావిస్తారు. దయతో, మరొక రకమైన నాయకత్వం ఉంది, ఇది కూడా మొదటిదాని కంటే చాలా అరుదు. వారికి, మతం అనేది దేవుడిని తెలుసుకోవటానికి మరియు గౌరవించడానికి పిలుపు. వారు దేవుడిని విలువలుగా అనుభవిస్తారు: సార్వత్రిక సోదరభావం, సత్యం, ప్రేమ, కరుణ మరియు న్యాయం వంటి విలువలు. భౌతిక లాభాల కోసం దేవుడిని పాలు ఆవుగా మార్చడం కాదు, వ్యక్తిగత మరియు సామాజిక స్థాయిలో మన మానవత్వంలోని ఉత్తమతను జరుపుకోవడానికి ఆహ్వానంగా దేవుడిని ఉన్నతీకరించడం వారి ప్రధాన ఎజెండా. ఇది వారి మత సంప్రదాయం యొక్క ఆధ్యాత్మిక మూలంలో క్రమంగా క్షయం గురించి వారిని ప్రత్యేకంగా ఆందోళనకు గురి చేస్తుంది, ఇది ప్రతి మతంలో జరుగుతుంది. చరిత్ర గుండా దాని ప్రయాణంలో, ప్రతి మతం దాని ఆధ్యాత్మిక మూలం నుండి క్రమంగా దూరం అవుతుంది. కాలక్రమేణా, ఒక మతం దాని ఆధ్యాత్మికతకు విరుద్ధంగా మారుతుంది. వైదిక దృష్టికి మరియు ప్రసిద్ధ హిందూ మతానికి మధ్య ఉన్న అంతరాన్ని చూసి మహర్షి దయానందుడు ప్రత్యేకంగా దిగ్భ్రాంతి చెందాడు. కాబట్టి అతను 'వేదాలకు తిరిగి వెళ్ళు' అనే ఆధ్యాత్మిక యుద్ధ నినాదంతో సన్నివేశానికి వచ్చాడు. అతను వేరే ఏమీ చేయకపోయినా, ఈ చొరవ ద్వారా నిజమైన ఆధ్యాత్మిక లక్ష్యం ఉన్న వ్యక్తిగా అతని అర్హతలను స్థాపించేది.

మత సంస్కరణ పట్ల ప్రవృత్తికి రెండు విరుద్ధమైన వ్యక్తీకరణలు ఉన్నాయి. మనం ఆధ్యాత్మిక వ్యక్తీకరణను దాని మతపరమైన ప్రతిరూపం నుండి వేరు చేయాలి. ఆధ్యాత్మిక నాయకుడు తన స్వంత మత సంప్రదాయాన్ని సంస్కరించడానికి మరియు పునరుజ్జీవింపజేయడానికి ఆసక్తి కలిగి ఉండగా, అతని మతపరమైన ప్రతిరూపం ఇతర అన్ని మతాలను దూషించడానికి మరియు సంస్కరించడానికి ఆసక్తి కలిగి ఉంటుంది. ఇతర మతాలన్నింటినీ తక్కువ చేసి, వాటి అనుచరులను కళంకం చేయడం ద్వారా, అతను తన స్వంత మతానికి గొప్ప సేవ చేస్తాడనే అపోహతో అతను నడపబడుతు న్నాడు. అయితే, ఒక ఆధ్యాత్మిక నాయకుడు ఇతర మతాలలో కుళ్ళిపోయిన వాటిని చూడకుండా ఉండవలసిన అవసరం లేదు, దయానంద మహర్షిలా కాదు. కానీ అతని ప్రధాన ఆందోళన ఏమిటంటే, మొదటగా, దయానంద్ తీవ్రమైన ఉద్దేశ్య భావనతో తన స్వంత మతాన్ని సంస్కరించుకోవడం.

ఈ సమయంలో దయానంద్ ఆధ్యాత్మిక లక్ష్యం యొక్క ప్రాముఖ్యతను అర్థం చేసుకోవడానికి కీలకమైన ఒక తేడాను మనం గుర్తించాలి. ఆధ్యాత్మిక ప్రపంచానికి ఆయన చేసిన గొప్ప సహకారం సంస్కరించ బడిన హిందూ మతం కాదు. మతం యొక్క ఆలోచనను సంస్కరించడానికి ఆయన ఒక స్పష్టమైన పిలుపు అని అది సూచిస్తుంది. ఇతర మతాల పట్ల ఆయనకున్న వ్యతిరేకత కాదు, ఇదే దయానంద్ వాటన్నింటినీ విమర్శించేలా చేసింది. ఆదర్శవంతమైన దృక్కోణం నుండి, అన్ని మతాలు వాటి ఆధ్యాత్మిక నియమాలు మరియు లక్ష్యాలకు దూరంగా ఉంటాయి. కాబట్టి ప్రతి మతంలోని విశ్వాసులు తమ మతాన్ని అర్థం చేసుకునే మరియు ఆచరించే విధానం గురించి విమర్శనాత్మకంగా అప్రమత్తంగా ఉండాల్సిన అవసరం ఉంది. స్వీయ విమర్శకు ఈ సామర్థ్యం ఒక మతం యొక్క ఆరోగ్యం మరియు దృఢత్వాన్ని రుజువు చేస్తుంది.

మరోవైపు, బాధ్యతాయుతమైన విమర్శ పట్ల అసహనం ఆ మతంలోకి ప్రవేశించిన క్షీణతకు సూచిక. దయానంద్ అభివృద్ధి చెందిన ఆధ్యాత్మిక క్రమశిక్షణ- సందేహించడం, చర్చించడం మరియు అవసరమైతే, భిన్నాభిప్రాయం-సార్వత్రిక ఆమోదానికి అర్హమైనది. నియమం ప్రకారం, మతపరమైన అంశాలు స్వీయ విమర్శకు అసమర్థమైనవి మరియు ఖచ్చితంగా ఆ కారణంగా, ఇతరులను విమర్శించడంలో సంతోషంగా ఉంటాయి. అయితే, ఆధ్యాత్మిక దృక్కోణం నుండి, స్వీయ విమర్శ చేసుకునే సామర్థ్యం అనేది ఇతర మతాలను కూడా విమర్శించడానికి ఒక వ్యక్తికి ఉన్న అధికారాన్ని కలిగి ఉంటుంది. "ముందుగా మీ స్వంత కంటిలోని దూలాన్ని తొలగించండి," అని యేసు చెప్పాడు, "అప్పుడు మీరు మీ సోదరుడి కంటిలోని నలుసును స్పష్టంగా చూస్తారు". ఆధ్యాత్మికత ఇతరులను తీర్పు తీర్చకుండా ఉండదు, కానీ తీర్పులు సత్యం ఆధారంగా ఉండేలా చూసుకుంటుంది మరియు పక్షపాతం, అజ్ఞానం మరియు దురభిప్రాయం ఆధారంగా కాదు.

నిజమైన మత నాయకుడి ఆధ్యాత్మికత యొక్క మూడవ అంశం ఏమిటంటే, సమాజంలోని బాధితులను విముక్తి చేయడానికి మరియు శక్తివంతం చేయడానికి ఆసక్తి. దయానంద్‌కు, ఆధ్యాత్మికత మానవ విముక్తి యొక్క ఎజెండా. మరియు ఈ విషయంలోనే అతను కులంతో నిండిన హిందూ మతం విచారకరంగా కోరుతున్నట్లు భావించాడు. అతనికి విగ్రహారాధన మరియు కులతత్వం మధ్య ఒక సహజ సంబంధం ఉంది, దీనిని మనం ప్రస్తుతం పరిశీలిస్తాము.

దయానంద్ యొక్క ఆధ్యాత్మిక లక్ష్యం దేవుని బిడ్డగా ప్రతి మానవుడి సాటిలేని విలువ గురించి ఒక ప్రత్యేకమైన నమ్మకం ద్వారా ప్రేరణ పొందింది. కుల అణచివేత, సతి మరియు హిందూ పక్షాల పేదరికంపై అతని నీతిమంతమైన కోపాన్ని రేకెత్తించింది ఇదే. లక్షలాది మందిని వారి పుట్టుక ఆధారంగా ఖండించిన కులం, వైదిక విశ్వాసంపై

అత్యంత చీకటి మచ్చ అని అతను ఒక సమయంలో గ్రహించాడు. అతనికి, అందరు మానవులూ పుట్టుకతోనే సమానమే. ప్రతి ఒక్కరూ శూద్రుడిగా జన్మించారు మరియు ఆధ్యాత్మికంగా అభివృద్ధి చెందుతున్న ఈ స్థితి నుండి బయటపడటం ప్రతి మానవుడి హక్కు మరియు విధి. శూద్రులుగా జన్మించినప్పటికీ, మనలో ఎవరూ శూద్ర స్థితిలో ఉండవలసిన అవసరం లేదుబీ మనం గొప్పతనం వైపు పరిణామం చెందాలి. మతం యొక్క పని ఏమిటంటే, ప్రజలు వారి శూద్ర స్థితి నుండి వారి ఆర్య (లేదా గొప్ప) విధికి తీర్థయాత్రలో సహాయం చేయడం. ఇది ఆధ్యాత్మికత యొక్క గాథ మరియు ఈ ప్రాథమిక మానవ అవసరాన్ని లేదా ఆధ్యాత్మిక దాహాన్ని తప్పించుకునే లేదా తిరస్కరించే ఏదీ మత రంగంలో సహించ కూడదు.

విగ్రహారాధన మరియు కులతత్వం మధ్య ఒక ఆధ్యాత్మిక సంబంధాన్ని దయానందుడు స్థాపించాడు. పదార్థానికి పూర్తి అస్తిత్వ స్వయంప్రతిపత్తి మరియు వాస్తవికతను మంజూరు చేస్తూనే, దేవుడు పదార్థంలో మూర్తీభవించలేడని లేదా దాని పరిమితులకే పరిమితం కాలేడని ఆయన తీవ్రంగా నొక్కి చెప్పాడు. ఈ వాదనకు సామాజిక పొడిగింపును అందించాలనుకుంటున్నాను. విగ్రహారాధన సమస్య ఏమిటంటే, నేను 'నిర్బంధ భ్రాంతి' అని పిలుస్తాను. ఇది దేవుని ఉనికి ప్రార్థనా స్థలం యొక్క అభయారణ్యం లేదా ప్రాంగణానికి పరిమితం చేయబడిందనే భ్రమను సృష్టిస్తుంది. విచిత్రంగా, దీనికి మరియు సృష్టికర్త అయిన దేవుడు అంతగా పరిమితం కాలేడనే కీలకమైన ఆధ్యాత్మిక అంతర్దృష్టికి మధ్య ఉన్న స్పష్టమైన వైరుధ్యాన్ని చాలా మంది గ్రహించరు. ఆయన సర్వవ్యాపి మరియు సర్వజ్ఞుడు. ఆయన బోర్డు రూమ్, బెడ్ రూమ్ మరియు ప్రసూతి గదిలో మానవులను ఒకే విధంగా ఎదుర్కొంటాడు. విగ్రహారాధనకు మద్దతుగా ముందుకు వచ్చిన ఆచరణాత్మక వాదనలు కాకుండా, విగ్రహారాధన యొక్క నికర ఫలితం ఒక విభజించబడిన ప్రపంచ దృక్పథం మరియు సామాజిక క్రమం. దేవుడు మరియు అన్ని సానుకూల విలువలు ప్రార్థనా స్థలాలకే పరిమితం చేయబడ్డాయి మరియు సమాజం మనిషిచే క్లెయిమ్ చేయబడింది మరియు నైతిక అడవిగా మార్చబడింది. అయితే, దేవుడిని సమాజం నుండి మినహాయించి, భూమిని మన స్వేచ్ఛా స్థలంగా చెప్పుకోవడానికి మనం దేవాలయాలు, మసీదులు మరియు చర్చిలను నిర్మించడానికి సంతోషంగా ఉన్నట్లు అనిపిస్తుంది. విగ్రహారాధన మరియు స్థానిక సామాజిక అన్యాయాల మధ్య సంబంధం ఇదే.

మానవ స్వభావం మరియు విధి గురించి మనకు అత్యంత గొప్ప భావనలు మరియు ఆదర్శాలు ఉన్నాయి, కానీ మన ట్రాక్ రికార్డ్ దానికి నిరూపించడానికి ఏమీ లేదు. మన సమాజంలో మహిళల-ముఖ్యంగా వితంతువుల-దుస్థితిని ఒక్క ఉదాహరణగా తీసుకోండి. దాని సర్వదేవత మరియు గ్రంథాలలో, హిందూ మతం మహిళలను ఆదర్శంగా తీసుకుంటుంది, కానీ మహిళల సామాజిక దుస్థితి పూర్తిగా భిన్నమైనది. ఆశ్చర్యకరంగా, స్వామి దయానంద్ బాలికలకు విద్యను అందించాల్సిన మరియు వితంతువులు తిరిగి వివాహం చేసుకోవడానికి అనుమతించాల్సిన అవసరాన్ని నొక్కి చెప్పారు.

మహర్షి దయానంద్ ప్రారంభించిన సామాజిక విముక్తి యొక్క కీలకమైన ఆధ్యాత్మిక ఎజెండా పక్కకు పడిపోయింది అనేది చాలా విచారకరం. తరువాతి దశాబ్దాలలో ఆయన అనుచరులు ఈ లక్ష్యానికి నిజాయితీగా మరియు నమ్మకంగా ఉండి ఉంటే, మనం నేడు భిన్నమైన మరియు గొప్ప సమాజంలో జీవిస్తూ ఉండేవాళ్ళం. మన జాతీయత యొక్క గత ఆరు దశాబ్దాలలో, కులం, మతతత్వం మరియు మహిళలపై అణచివేత వంటి దుష్టత్వాలు పరిమాణాత్మకంగా మాత్రమే పెరిగాయి. ఆశ్చర్యకరంగా, ఆర్య సమాజ్-స్వామి అగ్నివేష్ వంటి అరుదైన మినహాయింపులు తప్ప-ఈ అవినీతి నృత్యరూపకాన్ని చూస్తూ ఊరుకుంటారు. కొన్నిసార్లు, దాని మతపర మైన అంచు అస్పష్టత మరియు అసహన మౌలికవాద ఏజెంట్లకు సహాయం చేస్తుంది మరియు ప్రోత్సహిస్తుంది. ఆర్య సమాజ్ ఇకపై భారతీయ సందర్భంతో విముక్తి మరియు పరివర్తనాత్మక సంబంధంలో లేదని ఒకరు అభిప్రాయపడతారు. ఆర్య సమాజ్ ఇప్పుడు ఒక ఉద్యమంగా ఉందా లేదా అన్ని ఆచరణాత్మక ప్రయోజనాల కోసం, అది ఒక స్మారక చిహ్నంగా మారిందా అని ఆలోచించాల్సిన సమయం ఆసన్నమైంది. స్మారక చిహ్నం, యాదృచ్ఛికంగా, ఒక ఉద్యమం మరణాన్ని సూచిస్తుంది. ఇది, ఉత్తమంగా, ఒక ఉద్యమాన్ని సూచించే మమ్మీ చేయబడిన వేలు!

ఎటువంటి సందేహం లేకుండా, నేడు ఆర్య సమాజ్ ఉద్యమం కూడలిలో ఉంది. ఇక్కడి నుండి అది మరింత అసంబద్ధంలోకి మునిగిపోవచ్చు లేదా పునరుద్ధరణ మరియు పునఃనిర్మాణ మార్గాన్ని తీసుకోవచ్చు. వ్యంగ్యంగా, సమాజం యొక్క ఆచరణాత్మక సమస్యలలో ఒకటి దాని భౌతిక సంపద. ఇది గణనీయమైన భూ ఆస్తి మరియు సంస్థాగత ఆస్తులతో నిండి ఉంది. ఇది స్వయంగా సమస్య కానవసరం లేదు. కానీ దీన్ని ఒక వాస్తవంగా శాపంగా మార్చేది ఏమిటంటే, అందుబాటులో ఉన్న వనరులకు అనుగుణంగా ఒక లక్ష్యం లేకపోవడం. ఈ స్థితిలో, సేకరించబడిన భౌతిక వనరులు ఉద్యమం యొక్క లేబుల్‌ను కలిగి ఉన్న వారిలో దురాశను పదునుపెడతాయి, కానీ దాని నుండి ఆధ్యాత్మికంగా దూరం చేయబడతాయి. ఇదే సమాజాన్ని స్వీయ-ఓటమి వ్యాజ్యం మరియు రాజకీయ ధ్రువణతలోకి నెట్టింది. నియమం ప్రకారం, స్పష్టమైన లక్ష్యం లేనప్పుడు సంపద దానికదే ఒక ముగింపుగా మారుతుంది. ఒక లక్ష్యాన్ని సాధించడానికి ఉద్దేశించిన భౌతిక వనరులు దేవుడిగా మారుతాయి. ఇది అపరిమితమైన మరియు దోపిడీ దురాశను సక్రియం చేస్తుంది.

ఒక ఉద్యమం ఏ రకమైన నాయకులను ఆకర్షిస్తుందో లేదా ఉత్పత్తి చేస్తుందో ఆ ఉద్యమం యొక్క వాస్తవ దుస్థితికి ఒక ముఖ్యమైన సూచిక. అది ఆరోగ్యంగా మరియు చైతన్యవంతంగా ఉన్నప్పుడు, దాని నాయకులు ఆదర్శవాదులు మరియు దార్శనికులుగా ఉంటారు. కానీ అది అనారోగ్యంతో ఉన్నప్పుడు, అది కిరాయి మరియు క్రూరమైన అవకాశవాదులను ఆకర్షిస్తుంది, వారి స్వార్థ ప్రయోజనాలను సాధించడంలో పూర్తిగా నిష్కపటంగా ఉంటుంది.

దీని నుండి సమాజ్ ఎదుర్కొంటున్న రెండవ ప్రధాన సమస్య తలెత్తుతుంది: రాజీ స్ఫూర్తి, ఇది దాని లక్ష్య భావాన్ని చంపుతుంది. దురాశ బలవ[illegible]

మనిషి, సందేశం మరియు లక్ష్యం

- డాక్టర్ కపిల వాత్స్యాయన్

స్వామి దయానంద సరస్వతి జీవితం, కృషి మరియు సహకారంపై జరిగే ఈ ముఖ్యమైన సింపోజియంలో పాల్గొనమని నన్ను ఆహ్వానించడం గౌరవనీయులైన స్వామి అగ్నివేష్ గారి దయ మరియు ఉదారంగా ఉంది.

ఈ వేదికలోని ప్రముఖ వక్తలు ఇతర మతాలు మరియు విశ్వాసాలతో, ముఖ్యంగా ఇస్లాం, క్రైస్తవ మతం మరియు సిక్కు మతాలతో స్వామి దయానందుడి మేధో మరియు సామాజిక సంబంధాలపై అమూల్య మైన వెలుగును ప్రసరింపజేశారు. వారి ప్రెజెంటేషన్లకు నేను జోడించగలిగేది చాలా తక్కువ, ఇక్కడ పరిశోధించి, విచారించి, విభిన్న ఆలోచనా విధానాలలో మతపరమైన సూత్రాలు మరియు నైతిక, అభ్యాసాలలో నిజాయితీగల సంభాషణను స్థాపించడానికి ప్రయత్నించిన సత్య అన్వేషకుడు ఉన్నాడనే వాస్తవాన్ని నొక్కి చెప్పడం తప్ప. బౌద్ధమతం మరియు జైనమతంతో సహా అన్ని విశ్వాసాల సిద్ధాంతాలను ఆయన పరిశీలించారు. ఈ పోలికల ఆధారం దానికదే ఒక విస్తారమైన విషయం.

బదులుగా, 'హిందూ' అనే సాధారణ నామకరణం ద్వారా మనం అర్థం చేసుకునే ప్రతిదాని పునాదుల సారాంశానికి తిరిగి రావడానికి స్వామి దయానంద సరస్వతి నిరంతరాయంగా మరియు నిరంతరాయంగా ప్రాధాన్యత ఇవ్వడం యొక్క లోతైన ప్రభావం గురించి మరింత వ్యక్తిగత స్థాయిలో చెప్పడానికి నేను ఈ అవకాశాన్ని ఉపయో గించుకుంటాను. వేదాలను సారాంశంగా తిరిగి రావడమే కాకుండా, సారాంశాన్ని చర్య ద్వారా అనువదించడంపై ఆయన ప్రాధాన్యత తార్కికంగా ఉంది. దీనికి అతనికి సాధనాలు విద్య, మొదటి మరియు చివరివి. కఠినమైన క్రమశిక్షణ మరియు శిక్షణ కీలకం. ప్రవర్తన, నిజాయితీ, నైతిక మరియు నైతిక చర్యలు అంతిమ పరీక్ష. అందువల్ల, కపటత్వం మరియు ద్వంద్వ చర్యలు ఒక అసహ్యకర మైనవి. అతను నిర్భయంగా మరియు అవిశ్రాంతంగా బాహ్య 'సిద్ధాంతం' మరియు మతపరమైన సంకుచితత్వంలో పంజరంలో ఉన్న 'కపటత్వం' మరియు బాహ్య రూపాన్ని బహిర్గతం చేశాడు. ఏ రూపంలోనైనా కపటత్వం అనేక సామాజిక దురాచారాలకు మూలం అని నొక్కి చెప్పడంలో అతను ఎవరినీ వదిలిపెట్టలేదు.

శివలింగంపై ఎలుకలు పడిన సంఘటన తర్వాత ఇంటి నుండి బయలుదేరిన మొదటి క్షణం నుండి జోధ్‌పూర్ మహారాజును ఒప్పించే చివరి క్షణం వరకు ఆయన ప్రయాణం ఉత్సాహభరితమైన అన్వేషకుడు మరియు సంస్కర్త. ఆయన పర్వతాలను దాటారు, బద్రీనాథ్, కేదార్‌నాథ్ మరియు తుంగనాథ్ శిఖరాలను అధిరోహించారు, జ్ఞాన భాండాగారాలుగా వరిగణించబడే వారందరితో మరియు లెక్కలేనన్ని శాఖలు మరియు ఆరాధనల సంరక్షకులుగా భావించే వారందరితో నివసించారు మరియు సంభా షించారు. ఆయన బ్రహ్మ సమాజ నాయ కులు, మహర్షి దేబేంద్రనాథ్ ఠాగూర్ మరియు కేశబ్ చంద్రతో సంభాషించారు, రామకృష్ణ పరమహంసను కలిశారు, కానీ శాశ్వత మూలం వేదాలు వాటి స్వచ్ఛమైన స్వచ్ఛతలో ఉన్నాయని నొక్కి చెప్పడానికి మరియు ప్రకటించడానికి ఆయన తన వంతు కృషి చేశారు. తీవ్ర వ్యతిరేకత మరియు శత్రుత్వం ఉన్నప్పటికీ అనేక శాఖలకు చెందిన పూజారులు మరియు పండితులతో ఆయన నిర్వహించిన లెక్కలేనన్ని చర్చలు, అలుపెరు గని ధైర్యం, దృఢ నిశ్చయం మరియు లక్ష్యం పట్ల అచంచలమైన నిబద్ధతను తెలియ జేస్తాయి. ఆ చర్చల వివరాలను (శాస్త్రార్థం) మళ్ళీ చదివినప్పుడు, అవగాహన, అవగా హన మరియు ఆచారాలలోని తేడాలను బహి రంగంగా చర్చించడానికి అద్భుతమైన స్థలం ఉందని మరియు 'హిందూ మతం' అని పిలువబడే ఈ విస్తృతమైన మరియు అపరిమి తమైన వైవిధ్యమైన మహాసముద్రం యొక్క అభ్యాసాలను బహిరంగంగా చర్చించడానికి అద్భుతమైన స్థలం ఉందని ఒకరు ఆశ్చర్య పోతారు.

గోధుమ నుండి పొట్టును వేరు చేయడం, ప్రవర్తన మరియు చర్యకు మార్గనిర్దేశం చేసే జీవిత తత్వాన్ని పాత్య మూలాల నుండి సంగ్రహించడం ఆయన ఆందోళన.

ముందు ఎత్తి చూపినట్లుగా, తన కాలంలోని సమాజాన్ని సంస్కరించడానికి మరియు 'కులం' మరియు వర్ణాన్ని విడిచిపెట్టి, సంస్కరణకు మేధోపరంగా అధికారం పొందే కొత్త తరం భారతీయులను పెంపొందించడానికి విద్య మరియు శిక్షణ ప్రధాన సంస్థలు.

విద్యపై సత్యార్థ ప్రకాశ (లైట్ ఆఫ్ ట్రూత్ అని అనువదించబడింది)లోని అధ్యాయాలు నేటికీ అర్థవంతంగా ఉన్నాయి. భారత జాతీయ రాజ్యం ఉచిత మరియు తప్పనిసరి విద్య గురించి మాట్లాడటానికి చాలా కాలం ముందు, స్వామీజీ విద్య యొక్క ప్రాధాన్యతను సమర్థించారు. అన్ని పిల్లలను (బాలికలు మరియు అబ్బాయిలు సమానంగా, మరియు తేడా లేకుండా) పాఠశాలకు పంపాలని మరియు శారీరక, లోహ మరియు నైతిక విద్యను అందించాలని ఆయన సలహా ఇచ్చారు.

సముచితంగానే ఆయన 'పిల్లల పెంపకం' అనే అధ్యాయాన్ని శతపథ్ బ్రాహ్మణం నుండి ప్రసిద్ధ ఉల్లేఖనంతో ప్రారంభిస్తాడు, అంటే..,

"మాతృమాన్ పితృమాన్ ఆచార్యవాన్ పురుషో వేద"

('తల్లి, తండ్రి మరియు గురువు అనే ముగ్గురు మంచి గురువుల ప్రయోజనాన్ని పొందిన వ్యక్తి మాత్రమే గొప్ప పండితుడు కాగలడని ధృవీకరించండి').

సరైన ఉచ్చారణ, సరైన ఉచ్చారణ విషయంలో బిడ్డకు మొదటి గురువుగా ఆమె పాత్ర ఎంత ముఖ్యమో, తల్లి సంరక్షణపై స్వామీజీ ప్రాధాన్యత కూడా అంతే ముఖ్యమైనది. సంస్కృతం నేర్చుకోవడంపై ఆయన ప్రాధాన్యత ఇస్తూనే, ఇతర భాషలను నేర్చుకోవాలని కూడా ఆయన సిఫార్స్ చేస్తున్నారు. పిల్లల పెంపకం మరియు విద్యకు సంబంధించిన రెండు అధ్యాయాలలో, స్వామీజీ హేతుబద్ధమైన మరియు విశాల దృక్పథంతో కూడిన విధానాన్ని అవలంబిస్తారు. ప్రజలు భౌతిక శరీరం మరియు శరీర జీవక్రియ యొక్క పనితీరును తెలుసుకోవాలని మరియు గుడ్డి మూఢనమ్మకాలు, జ్యోతిష శాస్త్రం మరియు ఇతర వాటి ద్వారా కొట్టుకుపోకూడదని ఆయన కోరుకుంటున్నారు. అదే సమయంలో వస్తున్న ఈ సలహా శారీరక ఆరోగ్యం మరియు ప్రాథమిక విద్య గురించి అజ్ఞానాన్ని నిర్మూలించడానికి ఒక తీవ్రమైన అడుగు. వారి పిల్లల విద్యను నిర్లక్ష్యం చేసే తల్లిదండ్రులు అతనికి 'నిజమైన శత్రువులు'. తల్లిదండ్రుల అత్యున్నత విధి వారి పిల్లలకు విద్యను అందించడం. జ్ఞానాన్ని సంపాదించడం మరియు సత్యం మరియు నైతిక ప్రవర్తనకు అనుగుణంగా ఉండటం విద్య యొక్క లక్ష్యాలు. ఆయన దృష్టిలో అందరూ విద్యావంతులు కావాలి, యువరాణి లేదా బిచ్చగాళ్ల లేదా తక్కువ ధనవంతుల కుమారులు మరియు కుమార్తెలు. ఆయన సమానత్వ పాఠశాల వ్యవస్థను సమర్థించారు. పొరుగు పాఠశాలలు అనే పదానికి ఇవి నవజాత ప్రారంభం.

ఈ లక్ష్యాలకు భిన్నంగా, ధనవంతులకు మరియు పేదలకు అందుబాటులో ఉన్న విద్యా అవకాశాల మధ్య విస్తృత అంతరం ఉందని మాకు తెలుసు. మా పరంగా అనువదించబడినట్లుగా, స్వామీజీ పొరుగు పాఠశాలల వ్యవస్థను స్థాపించాలని వాదిస్తున్నారు, ఇక్కడ వివిధ సామాజిక-ఆర్థిక వర్గాలకు చెందిన వారందరికీ ఒకే విద్య అందించబడుతుంది. అయ్యో, గురుకుల వ్యవస్థ మరియు డి.ఎ.వి. పాఠశాలల విజయం ఉన్నప్పటికీ, ప్రభుత్వ మరియు ప్రైవేట్ రంగాలలో ఉన్నత పాఠశాలలు అని పిలవబడే వాటికి మరియు ఇతరులకు మధ్య విస్తృత వ్యత్యాసం ఉంది. 'ధనిక మరియు పేద అనే తేడా లేకుండా అందరినీ సమానంగా చూడాలి' అని స్వామీజీ పదే పదే పునరుద్ఘాటించారు. స్వాతంత్ర్యం వచ్చి ఆరు దశాబ్దాలు గడిచినా మనం ఈ 'లక్ష్యం' సాధించలేకపోతున్నాము.

స్వామీజీ విద్య యొక్క విషయాన్ని మరింత విశదీకరిస్తూ, బోధన మరియు అభ్యాసం యొక్క కంటెంట్, పాఠ్యాంశాలు మరియు బోధనా విధానం గురించి కొంత వివరంగా చెబుతారు. ఆయన ఈ వ్యవస్థను చాలా స్పష్టంగా వివరిస్తారు. విద్య శారీరక మరియు మానసిక సామర్థ్యాలను అభివృద్ధి చేయాలనే వాస్తవాన్ని ఆయన నొక్కి చెప్పారు. వేదాల యొక్క ముఖ్యమైన సారాంశం ఆధారంగా నైతిక విలువలను స్వీకరించడం చాలా ముఖ్యమైనది.

చివరికి, తన లక్షణ శైలిలో, సమాజంలోని ఏ వర్గం అయినా జ్ఞానాన్ని పొందకుండా నిరోధించాలనుకునే వారందరికీ ఆయన హితవు పలుకుతాడు. ఆయన నిస్సందేహంగా ఇలా అంటాడు: అందరు పురుషులు మరియు స్త్రీలు, అంటే మొత్తం మానవాళికి, క్షత్రియులు, శూద్రులు, స్త్రీలు, సేవకులు, అత్యల్ప స్థాయి వారు వేదాలను నేర్చుకోవచ్చు మరియు బోధించవచ్చు అనే విషయాన్ని తక్కువ అంచనా వేయడానికి ఆయన వేదాలను, ముఖ్యంగా యజుర్వేదాన్ని ఎంతో నమ్మకంగా ఆకర్షిస్తాడు.

'కాబట్టి అందరూ జ్ఞానాన్ని సంపాదించుకోవాలి, ధర్మాన్ని ఆచరించాలి, దుర్గుణాలను త్యజించాలి...'

జ్ఞానం అనేది సమాజంలోని ఏ ప్రత్యేక వర్గానికైనా, లింగానికీ ఉన్న ప్రత్యేక హక్కు కాదు.

ఆయన తన వాదనను దాని తార్కిక ముగింపుకు తీసుకువెళతాడు. ఒక ప్రశ్నకు సమాధానంగా, ఆయన ఇలా జవాబిస్తాడు, జ్ఞానం అందరికీ ఉద్దేశించబడకపోతే, దేవుడు వారి (శూద్రులు మరియు స్త్రీలు) శరీరాలలో వాక్కు మరియు శ్రవణ అవయవాలను ఎందుకు సృష్టించాడు ? సంక్షిప్తంగా, స్వామీజీ వేదాలను అర్థం చేసుకుంటున్నారు, కానీ 'వర్ణం, కులం లేదా లింగం ఆధారంగా వివక్ష చూపకూడదని' కూడా గట్టిగా సమర్థిస్తున్నారు.

శరీరం మరియు మనస్సు యొక్క చక్కటి విద్యను అందించడానికి, మహిళలు/బాలికలకు మంచి శారీరక విద్యను అందించాలని ఆయన సిఫార్సు చేస్తున్నారు. శారీరక వ్యాయామం మరియు రక్షణ మరియు దాడి నైపుణ్యాలు (గతకం)తో పాటు, మహిళలు అకౌంటింగ్ మరియు వాణిజ్య నైపుణ్యాలు మరియు ప్రాథమిక వైద్యం యొక్క జ్ఞానాన్ని పొందాలని స్వామీజీ అభిప్రాయపడ్డారు. అంతేకాకుండా, గణితం మరియు కళలు రెండింటికీ సమాన ప్రాధాన్యత ఇవ్వాలి. వాస్తవానికి, వ్యవస్థ నైతిక మరియు నైతిక విలువలను పెంపొందించాలి. అతనికి 'జ్ఞానం మాత్రమే తరగని నిధి, మీరు దానిని ఎంత ఖర్చు చేస్తే అంత పెరుగుతుంది'. విద్య మాత్రమే వ్యక్తిని మారుస్తుంది మరియు సమాజాన్ని సంస్కరిస్తుంది.

సత్యార్థ ప్రకాశంలోని ఈ ప్రకటనలు గురుకుల వ్యవస్థ మరియు %ణాాం% పాఠశాల వ్యవస్థకు ప్రేరణగా నిలిచాయి. స్వామి శ్రద్ధానంద స్థాపించిన మొదటి పాఠశాల ఒక రకమైన నిలువు విద్యను అందించగా, ముఖ్యంగా గురుకుల కాంగ్రీ, 'డి.ఎ.వి. పాఠశాల వ్యవస్థ విస్తృత ఆధారితమైనది, అన్ని కులాలు మరియు తరగతులకు తెరిచి ఉంది మరియు భారతీయ సంప్రదాయం యొక్క జ్ఞాన వ్యవస్థకు సమాన ప్రాధాన్యతనిచ్చింది, అలాగే ఆంగ్ల భాష మరియు ఆధునిక అంశాలపై పరిచయం మరియు నియంత్రణను కూడా ఇచ్చింది. సమతుల్యతను సాధించడానికి ప్రయత్నించారు. స్వామీజీ ఆదర్శాల నుండి ప్రేరణ పొందిన విద్యా వ్యవస్థలు మరియు ఆయన ప్రారంభించిన సంస్థ, **ఆర్య సమాజ్, భారతీయ సమాజాన్ని సంస్కరించడంలో ముఖ్యమైన పాత్ర పోషించాయి. చాలా మంది సంకుచిత మతవాదం యొక్క సంకెళ్ల నుండి విడిపోయారు, అలాగే భౌతిక జీవితంలోని సమస్యలను పరిష్కరించడానికి బుద్ధిహీనమైన ఆచారాలపై గుడ్డి మూఢనమ్మకాలు మరియు నమ్మకం కూడా ఉన్నాయి.**

ముఖ్యంగా ఉత్తర భారతదేశంలో ఈ సందేశం వ్యాప్తి చెందడం మరియు సంస్థల స్థాపన వేగంగా జరిగింది, దాదాపుగా ఉత్సాహభరితంగా జరిగింది. సుదూర కాశ్మీర్ మరియు పంజాబ్ అంతటా రాత్రికి రాత్రే బాలికల కోసం పర్దా లేని పాఠశాలలు ఆవిర్భవించాయి. కులం, సామాజిక స్థితి ఆధారంగా ఎటువంటి వివక్షత లేదు. నిజానికి, ఆర్య సమాజ్ అనుచరులు చాలా మంది తమ 'కుల' అనుబంధాన్ని బహిర్గతం చేయకుండా ఉండటానికి వారి ఇంటిపేర్లను ఉపయోగించడం మానేశారు. 'కుమార్' మొదలైన సాధారణ ముగింపులను ఉపయోగించడం ప్రారంభించారు. నేడు 'కులం' మరియు మతపరమైన సెక్టారియన్ అనుబంధాలు మన రాజకీయ వ్యవస్థల లోపలికి ప్రవేశిస్తున్నప్పుడు మనం ఈ ఉద్యమాన్ని తిరిగి అంచనా వేయాలి.

జననం లేదా కులం ఆధారంగా ఉత్పాదకత లేని సామాజిక సోపానక్రమాన్ని తిరిగి స్థాపించడంలో పెరుగుదల ఉందా? ఇది ఖచ్చితంగా సామాజిక నిర్మాణాన్ని బలహీనపరిచింది మరియు ప్రజాస్వామ్య పాలనా వ్యవస్థ యొక్క సమర్థవంతమైన పనితీరుపై ప్రతికూల ప్రభావాన్ని చూపింది ?

లింగం అనేది అర్థం చేసుకోదగినంతగా చర్చించబడిన, చర్చించబడిన సమస్య, ఇది బాధ మరియు అశాంతికి కూడా కారణం. స్వామీజీ బాలికలకు విద్యను అందించాలని, సమాన అవకాశాలు కల్పించాలని కోరుకోవడమే కాకుండా, బాల్య వివాహాలను ఖండించడంలో మరింత ముందుకు వెళ్లారు, సరిగ్గా అలాగే చేశారు. వితంతు పునర్వివాహం నిషేధాన్ని కూడా ఆయన సవాలు చేశారు. సంక్షిప్తంగా, స్త్రీలకు పురుషులతో సమాన హక్కులు, అధికారాలు ఉండాలని ఆయన కోరుకున్నారు.

ఆ విధంగా స్వామీజీ బలగాలకు తీసుకు వచ్చిన మరియు పోరాడిన సమస్యలు, ఆయన మరణించిన శతాబ్దం మరియు త్రైమాసికంలో అనేక మార్పులు జరిగినప్పటికీ, ఇప్పటికీ మనతోనే ఉన్నాయి. ప్రజాస్వామ్యంలో ఓట్లను సమీకరించడానికి ప్రాతిపదికగా 'కులం' దాని ప్రతికూల అవతారంలో ప్రాథమిక మరియు ప్రాథమిక స్థాయి ఉచిత మరియు నిర్బంధ విద్య లక్ష్యాన్ని సాధించడానికి మనం ఎక్కడా దగ్గరగా లేము మరియు లింగ అసమానతలు మునుపటి కంటే వికారమైన రూపాల్లో మన ముందు ఉన్నాయి. మనం మళ్ళీ సమతుల్యత మరియు ఆరోగ్యాన్ని పునరుద్ధరించగలమా? భారతదేశంలోని మేధావులు, ఆధ్యాత్మిక నాయకులు సామాజిక సంస్కర్తలు, వారి ఆలోచనలు మరియు చర్యలు అనుగుణంగా ఉన్నాయి. ఇతరుల సూత్రాలు మరియు విలువలతో చర్చ మరియు చర్చకు తెరిచినంత లోతుగా పాతుకుపోయిన, విస్తృతంగా 'సమ్మిళితమైన' మరియు దాని ప్రాథమిక ప్రధాన విలువలలో దృఢంగా ఉండే భారతదేశాన్ని రూపొందించడానికి మనం వారిని అనుకరించగలమా?

..13 వ పేజీ శేషము

పెంచుతుంది. దీనికి ఎటువంటి ఆదర్శవాద లేదా వేదాంత స్థిరత్వం అవసరం లేదు. దురాశలో, వ్యక్తిగత లాభం ఏకైక ప్రేరణాత్మక అంశం మరియు ఈ ప్రయోజనానికి ఉపయోగపడేది ఏది అయినా స్వాగతించదగినది. ఇది ఆర్య సమాజ్‌లోని ఒక వర్గం సంఘ్ పరివార్‌కు సామీప్యతను వివరిస్తుంది, ఇది బిజెపి నేతృత్వంలోని %చీణూ% పాలనలో స్పష్టంగా కనిపించింది. ఈ రకమైన రాజీ ఉద్యమ స్ఫూర్తికి విషం. దానిని అరికట్టి నిర్మూలించకపోతే, అది ఆ ఉద్యమం యొక్క ఖచ్చితమైన మరణానికి దారితీస్తుంది. రాజీ అనే సంకెళ్లను తొలగించి, నిబద్ధత అనే రెక్కలను స్వీకరించాల్సిన అత్యవసర అవసరం ఇప్పుడు సమాజానికి ఉంది. మహర్షి వ్యక్తిత్వం మరియు ఆకర్షణ యొక్క మాయాజాలం నిబద్ధత. తరచుగా, ఆర్య సమాజం యొక్క ప్రజా కార్యక్రమాలకు హాజరవుతున్నప్పుడు అది ప్రత్యేకంగా ఎక్కడికీ వెళ్ళడం లేదని నాకు అనిపిస్తుంది. విధులు నాయకుల ప్రాముఖ్యతను ప్రదర్శిస్తాయి మరియు పెద్దలకు దండలు వేసే అంతులేని ఆచారం అజెండాను దాదాపుగా దృష్టిలో ఉంచుకోదు. సమాజం ఎదుర్కొంటున్న మూడవ సమస్య దాని స్ఫూర్తిని మరియు అసలు దృష్టిని కోల్పోవడం. భారతదేశంలో ఒక గొప్ప సమాజాన్ని అభివృద్ధి చేయడానికి ఆర్య సమాజం ఒక సమగ్ర సామాజిక-ఆధ్యాత్మిక దృష్టి. ఆ కోణంలో, ఇది ఒక మతం కాదు, ప్రపంచ ఔచిత్యాన్ని కలిగి ఉన్న ఉద్యమం. మరియు ప్రపంచ స్థాయిలో దాని సరైన పాత్రను పోషించడానికి వేదిక ఇప్పుడు సిద్ధంగా ఉంది. కానీ అలా చేయడానికి, సమాజం హృదయపూర్వక స్వీయ-మూల్యాంకనం మరియు ఆధ్యాత్మిక పునరుద్ధరణ ప్రక్రియ ద్వారా వెళ్ళాలి. అది దయానందుడి స్ఫూర్తిని సంగ్రహించాలి. దయానందుడిని అనిడోల్‌గా మార్చకూడదు. ఆయన లక్ష్యం కాదు. ఆయన అరణ్యంలో ఏడుస్తున్న స్వరం, ప్రజలను పునరుద్ధరణ మరియు పునరుజ్జీవనం కోసం పిలిచాడు. ఆయన తన కాలపు పరిమితులకు అతీతుడు కాదు. కానీ ఆయన సాధ్యమైనంతవరకు వాటి కంటే పైకి ఎదగడానికి ప్రయత్నించారని చెప్పాలి. ఆయన అనుచరులకు ఇచ్చిన సవాలు ఏమిటంటే, ఇచ్చిన సందర్భాన్ని ఆధ్యాత్మిక హేతుబద్ధత దృక్కోణం నుండి నిమగ్నం చేయడం. దేవుని ప్రేమ, కరుణ, సత్యం మరియు న్యాయం మన సామూహిక ఉనికి యొక్క నరాలు మరియు కణజాలాలలో ప్రబలంగా ఉండేలా చేయడం మరియు అన్ని రకాల అణచివేత మరియు దోపిడీని, ముఖ్యంగా మతం యొక్క అలిబి కింద ఆచరించే వాటిని అంతం చేయడం.

మహర్షి దయానంద్ మతాన్ని విముక్తి మరియు సామాజిక అభ్యున్నతికి సాధనంగా మార్చడానికి సార్వత్రిక ఆహ్వానం. అణచివేత శక్తులపై మరియు అణచివేతను చట్టబద్ధం చేసే అస్పష్టవాద ఏజెంట్లపై ఆయన క్రూరమైన యుద్ధాన్ని ఆదేశించాడు. ఆర్య సమాజం అనేది మానవ జాతి యొక్క గొప్పతనాన్ని జరుపుకోవడానికి ఆదేశించబడిన ఒక ఉద్యమం, ఇది అన్ని వాస్తవికతకు మూలం మరియు నిజమైన మానవత్వం యొక్క మార్గదర్శక కాంతిపై ఆధారపడి ఉంటుంది. మన జాతీయ దృశ్యానికి దాని ఔచిత్యము ఒక స్పష్టమైన వాస్తవికత. దాని నేటి సంరక్షకులు దీనిని ఎంతవరకు గ్రహించి, దీనిని పరిష్కరించ డానికి ధైర్యం కలిగి ఉన్నారో, కాలమే సమాధానం చెప్పాలి.

సత్యార్థ ప్రకాశము యొక్క రచనా విధానము

హిందీ మూలం :
డా॥ భవనీలాల్ భారతీయ్

తెలుగు అనువాదం :
ఆచార్య అరవింద్ శాస్త్రి, హైదరాబాద్

సత్యార్థ ప్రకాశాన్ని రచించాలనే ఆలోచన కలిగినప్పుడు స్వామి దయానంద సరస్వతుల వారు దాని కొరకు ఒక స్థూలమైన రూపు రేఖ తయారు చేసారు. దానిని అతడు లిపి బద్ధము చేసి యుండవచ్చు లేదా తన మానస పటలంపై అంకితము చేసికొని యుండవచ్చును. ఈ గ్రంథము ద్వారా మనుష్యుని యొక్క లౌకిక మరియు పారలౌకిక ఉన్నతి యొక్క విధానాన్ని ప్రస్తుతించుట అతని ఉద్దేశ్యము అయి యుండెను. కారణ మేమనగా శాస్త్రకారు అభ్యుదయము (సాంసారికి ఉన్నతి) నిశ్రేయసము (మోక్షము)లను ధర్మము యొక్క లక్ష్యముగా వాటిని ప్రాప్తించుట కొరకు ఉపదేశించారు. స్వామిజీ తన గ్రంథము ద్వారా మత-మతాంతరములలో గల లోపాలను, దోషాలను కూడా బట్టబలు చేయదలచారు. ఆర్యావర్తము లోచేలు మానవ జాతిని ఆందోళన, అభద్రత గురి చేసినవి. అందువల్ల సత్యార్థ ప్రకాశాని రచించిన స్వామిజీ మానవ జీవనము యొక్క సమగ్ర అభ్యుదయము యొక్క ఆదర్శ దినచర్య ఆశ్రమ వ్యవస్థను దృష్టిలో నుంచుకొని ఈ గ్రంతములో బ్రహ్మచర్యము (సంతానము యొక్క విద్య మొదలైనవి) గృహస్థము, వానప్రస్థము మరియు సన్యాస ఆశ్రమాలలో పాలన-పోషణ కర్తవ్య కర్మలను నిరూపించారు. దానితో పాటు రాజ్యపాలన-శాసకుల (రాజుల) యొక్క ప్రసంగము వచ్చినప్పుడు వీరు వేదము, ఈశ్వరుడు, సృష్ట ఉత్పత్తి, స్థితి మరియు ప్రళయములు, జీవుని బంధనము మరియు మోక్షము వంటి విషయముల మీమాంస సమగ్రముగా చేసారు. చివరిగా మానవుని కొకు తినదగినవి (భక్ష్యములు) తినకూడని (అభక్ష్యములు) పదార్థములు, ఏ ఆచారములు పాటించదగినవి ? ఏవి విడువదగినవి ? అనే విషయాలను చర్చించారు. ఈ సమగ్ర వివేచన యొక్క ఆరంభము వారు పరమాత్ముని స్వరూపము, నామము మరియు అతని గుణ-కర్మ వివేచనతో ప్రారంభించాలని తలచారు. కావున వారు గ్రంథము యొక్క ప్రథమ సముల్లాసము (అధ్యాయ ము)ను పరమాత్మ యొక్క మూల స్వరూపము తదితరములను నిరూపించారు.

ఇప్పుడు మేము క్రమముగా సత్యార్థ ప్రకాశము యొక్క పూరార్దము (పార్ట్ 1) మరియు ఉత్తరార్థము (పార్ట్ 2)లలో వర్ణించబడిన విషయముల రూపురేఖలను ప్రస్థుతము చేస్తున్నాము. ప్రథమ సముల్లాసము యొక్క ఆరంభము ఓ3మ్ శనో మిత్రః అనే ఉపనిషత్ లో చెప్పబడిన స్లోకముతో జరుగుతుంది. స్వామిజీ ఓ3మ్‌ను పరమేశ్వరుని ప్రముఖ నామముగా తెలిపి ఈ శబ్దములో ఇమిడి యున్న అ, ఉ, మ లలో దాగి యున్న ఇతర శబ్దముల యొక్క అభిప్రాయములను స్పష్ట పరిచారు. తదనంతరము వైదిక ఏకేశ్వర వాదము ననుసరించి మంత్ర గతమైన మిత్ర, వరుణ, అర్యమా, ఇంద్ర, బృహస్పతి, విష్ణు మరియు దురుక్రమః వంటి శబ్దములను వరమాత్మ యొుక్క వాచకములుగా నిరూపించారు. ఆతరువాత ప్రయోగాత్మకముగా పరమాత్ముని 100 (వంద) శబ్దములను వ్యాకరణ అనుసారంగా వ్యుత్పత్తి దర్శింపజేసి వాటిని ఈశ్వర పూర్వకమైనవిగా సిద్ధింపజేసారు. ఆర్య సమాజము యొక్క ఒకే అల్ప ఖ్యాతి గడించిన విద్వాన్ విద్యాసాగర్ శాస్త్రి వేదాలంకార్ గారు చాలా సంవత్సరముల క్రితము అష్టోత్తర శతమాలిక పేరుగల గ్రంథాన్ని వ్రాసి ప్రథమ సముల్లాసములో పరమాత్ముని 108 నామములను విభిన్న ప్రమాణముల ద్వారా బలపరచారు. వారి శాస్త్రీయత యొక్క ఘోషణ ధ్యానములో ఉంచుకోవలసినది. ఈ ప్రకరణములో లేఖకులు (దయానందుల వారు) మంగళ, బుధ, శుక్ర, శనిచర్, రాహు మరియు కేతువుల యొక్క పరమాత్మ పూర్వక అర్థమును వచించారు. వీటిపై వచ్చిన అభ్యంతరమలను నిరాకరిస్తూ శాస్త్రీజీ ఈ శబ్దములను ఈశ్వర వాచకములుగా నిరూపించారు. సామాన్యముగా ఈ పేర్లు విచిన్నమైన గ్రహములకు చెందినవి.

ప్రథమ సముల్లాసములో స్వామిజీ ప్రారంభములో మంగళాచరణము, దేవీదేవతల స్థుతి పూర్వక పద్యముల యొక్క ఆచారము సరియైనది కాదని తెలిపినాడు. అంతేగాక ఆర్ష గ్రంథములు ఓ3మ్ లేక అథ అను పదములచే ఆరంభించ బడునని, రాముడు, కృష్ణుడు, శివ, గణేశ మొదలైన పౌరాణిక దేవతల స్థుతిలో కాదని తెలిపినాడు.

ఈ విధంగా మనుష్యునకు పరమారాధ్యమైన పరమాత్మ యొక్క సంక్షిప్త వివేచనతో గ్రంథమును ఆరంభించి స్వామి వారి యొక్క సదాచార సంబంధమైన ప్రశిక్షణ, బాల్య కాలములోనే వారిలో మంచి సంస్కారములను పెంపొందించుట వంటి విషయములను చర్చించారు. వీరి మాన్యత ప్రకారము బాలకుని యొక్క ప్రారంభిక గురువులు, శిక్షణ నిచ్చే వారు, అధ్యాపకులు కేవలము తల్లి మరియు తండ్రి మాత్రమే. అందుకే వారు తల్లిదండ్రులను సావధాన పరుస్తూ ఇలా అంటారు.- "మనోవైజ్ఞానిక విషయమును అనుసరించి వారు బాల్యావస్థలో పిల్లల కోమలమైన మనస్సులలో భూత, ప్రేతములు మొదలైన కల్పిత, భయపెట్టే సంస్కారములకు స్థానమివ్వ కూడదు". ఆ ప్రసంగములోనే వారు బాలకుల యొక్క ఫలిత జ్యోతిషము ఆధార పడిన జన్మ పత్రి (దీనిని వీరు శోధ పత్ర మందురు) వ్రాయించుట మరియు దాని వల్ల కలిగే హానిని కూడా ఉల్లేఖించారు.

తృతీయ సముల్లాసము బ్రహ్మచారుల యొక్క శాస్త్ర విద్యా సంబంధమైనది. దయానందిని విద్యా విషయకమైన అన్ని సూత్రాలు ఇందులో పొందు పరచ బడ్డాయి. బాల బాలికల అనివార్య (తప్పనిసరి) విద్యా, విద్య కొరకు సౌకర్యములను సమకూర్చుటలో బీద-ధనిక భేధము పాటించరాదు. గురుకుల వ్యవస్థ యొుక్క మహోత్వము, అందరు విద్యార్థులకు సమానమైన జీవన యాపన చేసే అవకాశముల నివ్వాలని, అంతేకాక శాస్త్రీయ అధ్యయనము యొుక్క ఆదర్శ పాఠ్య క్రమములో ఆర్ష గ్రంథములు మాత్రమే

జరుగుట ఉచితమని వారు స్పష్టముగా తెలియ పరచారు. ఈ వివేచన అంతర్గతంగా గ్రాహ్య మరియు త్యాజ్య (గ్రహించ వలసినవి మరియు వదలి పెట్ట వలసినవి) గ్రంథములను సూచీ బద్ధము (Identify) చేసినారు. మధ్య కాలములో ప్రచారములో ఉన్న "స్త్రీలు మరియు శూద్రులు వేదములు చదువుటకు, చదివించుటకు వారికి అధికారము లేదు" అనే విషయంలో ప్రబలంగా విభేదించారు. అందరికీ వేదమును అధ్యయనము చేసే అధికారము కలదని వాదించారు. దీనికి ప్రమాణముగా యజుర్వేద మంత్రము **"యథే మాం వాచం కళ్యాణీ మావధానీ జనేభ్యః"**... ను ఉదహరించారు.

చతుర్థ సముల్లాసము గృహస్థాశ్రమ విషయమునకు సంబంధించినది. బ్రహ్మచర్యాశ్రమము నుండి నేరుగా సంన్యాసిగా మారిన దయానంద సరస్వతి గృహస్థాశ్రమ మహత్వాన్ని అనుభవించాడు మరియు దానికి సంబంధించిన అన్ని విషయాలను అందులో పొందు పరచారు. ఈ వివేచన ముఖ్యముగా మనుస్మృతిపై ఆధారపడి ఉంది. ఇందులో బాల్య వివాహ నిషేధము, గుణ, కర్మ, స్వభావాల ననుసరించి వర్ణ వ్యవస్థ, పంచ మహా యజ్ఞ విధి మరియు ఆపధర్మ రూప (నియోగ విషయము)లో లేఖకుని ఆశయమును సరిగా అర్థము చేసుకోక విపక్షీయులు స్వామిజీపై ఎన్నో నిఃదలు వేసారు. దాని తర్వాత వచ్చిన ఆర్య విద్వాంసులు దానికి తగిన జవాబు ఇచ్చారు.

పంచమ సముల్లాసములో వాన ప్రస్థము మరియు సన్యాసములో వివేచన చేయబడినది. ఈ మొత్తము ప్రకరణము మనుస్మృతిపై ఆధారపడి ఉన్నది. ఇందులో ఒక శ్లోకము (వివిధాని చరత్నాని వివిక్తే పూపపాదయేత్) స్వామిజీ మనుమహర్షిని ఉదహరిస్తూ ఏమని వ్రాస్తాడంటే "సన్యాసి వర్గమునకు ప్రజల ద్వారా లభించిన ధనాన్ని వారు సమాజము మరియు లోక హితమునకు చేయవలెను. నిజానికి ఈ శ్లోకము నడ్డము పెట్టుకొని ఆక్షేపించే వారు అనేక అనర్ధలమైన ఆరోపణలు చేసారు. దయానందుడు లోకము నుండి వియుక్తుడై ఉండి కూడా డబ్బును కూడగట్టుకొనే బావనతో ఉన్నాడని అతనిని నిందించారు. వాస్తవానికి లోకహితము కొరకు డబ్బును సంచయము చేయడం ఏమి పొరపాటు పని కాదు.

రాజధర్మమును ప్రతిపాదించిన ఆరవ సముల్లాసము పూర్ణ రూపములో మనుస్మృతి యొక్క ఏడవ అధ్యాయముపై ఆధార పడినది. ఇందులో రాజు, ప్రజల యొక్క పరిస్థితి, రాజు, మంత్రి యొక్క కర్తవ్యాలు, న్యాయ మరియు శాసన వ్యవస్థ, పన్నుల వసూలు (Tax collection), యుద్ధము మరియు దాని యొక్క నియమాలు, దండ విధానము మొదలైన విషయాలు పొందుపరచ బడినవి. ఇవన్నీ రాజ ధర్మము అంతర్గతమైన విషయాలు. దేశ కాల పరిస్థితులను అనుస రించి ఇందులో పరివర్తనము చేయుట కూడా స్వామిజీకి అభీష్టమై (అంగీకార యోగ్యమై) యున్నది.

రెండు నుండి మొదలుకొని 6వ సముల్లాసము వరకు లేఖకుడు లౌకిక విషయములను గురించి వ్రాసాడు. 7, 8, 9వ సముల్లాసములలో పౌర లౌకిక విషయములను చర్చిస్తారు. సప్తమ సముల్లాసము వేదము మరియు ఈశ్వర విషయకమై ఉన్నది. ఈశ్వర వివేచన సందర్భముగా ఏకేశ్వర వాదము యొక్క అవధారణ, పరమాత్మ స్తుతి, ప్రార్థన మరియు ఉపాసన, నిర్గుణ, సుగున వివేచన మరియు అవతార వాదము యొక్క అవైదికతను ప్రతిపాదించారు. వారి యొక్క వేద వివేచన వేదములు నలుగురు ఋషులలో ప్రకటమగుట, వేదములు సారభౌమికత, వేద సంజ్ఞా విచారణ వేద శాఖల విచారణ, నిరుక్త ప్రతిపాదితమైన వేదార్థముల యొక్క ఆర్ష ప్రణాళిక, మంత్రముల యొక్క ఋషి, దేవత, ఛందస్సు మరియు స్వరము మొదలైన విషయములకు సంబంధించి యున్నది.

అష్టమ సముల్లాసము సృష్టి యొక్క ఉత్పత్తి, స్థితి మరియు పాలన వంటి విషయములను తీసుకొని వ్రాయబడినది. ఇందులో ఈశ్వరుడు, జీవుడు మరియు ప్రకృతి యొక్క అనాదిత్వము, సృష్టి రచనలో పరమాత్ముడు నిమిత్త కారణము అను దార్శనిక విషయములతో పాటు ఆర్యావర్త దేశము యొక్క సరిహద్దులు ఆర్య, దస్యు యుద్ధము, భారత దేశము యొక్క పరాధీనత, వాటి కారణములు, వివరణ వంటి ఉపయోగ పూర్వకమైన విషయాలు కూడా చర్చించబడినవి.

నవమ సముల్లాసములో జీవుల బంధ, మోక్షముల వివేచన చేయబడినది. ఇందులో ముక్తి స్వరూపము మరియు సాధన, కర్మ చేయుటలో జీవుని స్వతంత్రత, ముక్తి నుండి తిరిగి వచ్చుట (పునరావృత్తి), కర్మఫల యోగము మొదలైన విషయములు వ్రాయబడినవి. ముక్తి నుండి జీవుని పునరాగమనము అనే విషయము మనకు క్రొత్తగా అనిపిస్తుంది. ఈ యథార్థము స్వామి దయానందుల వారి ద్వారా యుక్తి, శాస్త్రీయ ప్రమాణముల ద్వారా నిరూపించ బడినది.

దశమ సముల్లాసము ఆచారము. అనాచారము మరియు భక్ష్యములు (తిన వలసినవి) అభక్ష్యములు (తినికూడనివి) విషయముగా నున్నది. ఇందులో మాంసాహార త్యాగము, పురాతన ఇతిహాసము, శుభ్రత-అశుభ్రత వంటి విషయములతో పాటు సముద్ర యాత్ర చేయుట సమర్థించబడినది. ఆర్థిక దృష్టితో గోవుల పాలన కలిగే ప్రయోజనాలు, గోవధ వల్ల హాని అను వీటి వివేచన కూడా ఈ అధ్యాయములో కలదు.

మిగిలిన నాల్గు సముల్లాసముల ఉత్తరార్థము ఇతర మతముల సమీక్షా విషయముగా నున్నది. ఏకాదశ సముల్లాసములో మహా భారత యుద్ధముతర్వాత ఉత్పన్నమైన అవైదిక మతముల తర్క యుక్త, ప్రమాణ యుక్తమైన సమీక్ష చేయబడినది. ఇందులో శంకర వేదాంత మతమును మొదలుకొని పందొమ్మిదవ శతాబ్దపు బ్రహ్మ సమాజము మరియు ప్రార్థనా సమాజము వరకు గల మత-సంప్రదాయముల యొక్క పూజ, అవతార వాదము, సాకారోపాసన, జలాశయములను తీర్థములుగా నమ్ముట వంటి విషయముల సమీక్ష ఉన్నది.

12వ సముల్లాసములో అవైదిక మతముల సమీక్ష జరుపబడినది. చార్వాకులు, బౌద్ధులు, జైన మతముల దార్శనిక, ఆచార గత విశ్వాసముల సమీక్ష ఈ సముల్లాసము లోని విషయము. జైన మత సమాలోచన కొరకు ఆ మతము యొక్క శ్వేతంబర మరియు దిగంబర సంప్రదాయములలోని మాన్య గ్రంథములు ఆధారముగా చేసుకొన బడినది.

మిగిలిన 13వ మరియు 14వ భారత దేశము బయట జన్మించిన క్రైస్తవ మరియు ఇస్లామ్ విషయాలకు సంబంధించి యున్నది. తన జీవిత కాలములో స్వామిజీ అనేక ఫాదరీలతో కలిసాడు. వారితో విచార-విమర్శ చేసి యున్నాడు. అప్పటికే బైబిల్ గ్రంథము యొక్క అనువాదము సంస్కృతము, హిందీ భాషలలో జరిగియున్నది. స్వామిజీ యొక్క సమీక్ష ఈ అనువాదాల పైనే ఆధారపడి యున్నది. స్వామిజీ తన ప్రేరణతో పట్నాకు

...శేషము 20వ పేజీ పైన

कर्नाटक प्रान्त की आर्य समाज मन्नाईखेळी द्वारा आयोजित आर्य वीर दल का संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न । शिविर में लगभग ३०० नौजवानों ने भाग लिया । शिविर स्वामी देवव्रत जी के तत्वावधान में चला । अंतिम समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठल राव आर्य जी, सभा मन्त्री श्री हरिकिशन जी वेदालंकार एवं मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी आदित्यवेश जी ने भाग लिया । शिविर का आयोजन समाज के प्रमुख विवेक जी एवं जगन्नाथ जी ने मिलकर उत्तरप्रान्त की आर्य समाजों के सहयोग से किया । आसनादि करते हुए शिविरार्थियों को चित्र में देखा जा सकता है ।

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-05-2025 REGISTERED-REGD. No. D/RNP/HCD-783/2024-26 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040-24760030.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,
15 Hanuman
New Delhi-110001

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल मलकपेट द्वारा गुरुकुल परिसर में आयोजित बालकों का संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न, आसन एवं मलकम्भ करते हुए शिविरार्थियों को चित्र में देखा जा सकता है ।

आर्य जीवन पाक्षिक पत्र का स्वामित्व सम्बन्धी विवरण

फार्म ४ नियम ८
(प्रेस और रजिस्ट्रेशन एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
प्रकाशन का समय	:	प्रति मास २ एवं १७ तारीख को पोस्टिंग:३ व १८
मुद्रक का नाम	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना घर नं. ४-२-१५, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद
सम्पादक	:	विठ्ठलराव आर्य
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
जो व्यक्ति पत्र के स्वामी है	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
भागीदार हिस्सेदार	:	आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना

मैं विठ्ठल राव सुपुत्र गोविन्द राव इस पत्र के द्वारा घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण जहाँ तक मेरा ज्ञान हैं वास्तव में सत्य है ।

विठ्ठल राव आर्य, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद, आ.प्र.-तेलंगाना

...18వ పేజీ శేషము
చెందిన మున్షీ మనోహర్‌లాల్ గారు ఖురాన్‌ను హిందీలోకి అనువదించారు. 14వ సముల్లా సము గురించి ప్రొఫెసర్ మహేశ్ ప్రసాద్ గారు ప్రామాణిక రూపములో వ్రాసారు. గ్రంథము చివర సమస్త వ్యామం తవ్య ప్రకరణము వ్రాసి వేద సమ్మతమైన మాన్యతలనే అంగీకరింతునని స్వామిజీ స్పష్టము చేసారు. బ్రహ్మ మొదలు జైమినీ ఋషుల వరకు సమ్మతమైన విషయాలే అంగీకార యోగ్యమైనవని వారి యొక్క అభి మతము ఈ గ్రంథము సత్యార్థ ప్రకాశము అనబడే ఈ ఋషుల మాన్యతల యొక్క సంక్షేప సారము.

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.
Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
सम्पादक : श्री विठ्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से **आकृति प्रिन्टर्स,** चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया । **Narendra Bhavan**
प्रबन्धक प्रकाशक : श्री हरिकिशन वेदालंकार, मन्त्री सभा **आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना,** सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. **Ph : 040-24760030.**